गहराता कोरोना संकट

20 मई	1 जून	10 जून
1,05,750 संक्रमित	1,90,535 संक्रमित	2,76,146 संक्रमित

सावधान रहिए सुरक्षा के उपाय कीजिए

मास्क पहनिए

बार-बार साबुन से हाथ धोइए
सामाजिक दूरी

अनावश्यक बाहर निकलने से बचिए

ई-संस्करण-9 | निःशुल्क | 10 जून 2020

इसे डाउनलोड कर स्वयं अपने मोबाइल, आईफोन, कम्प्यूटर पर अथवा प्रिण्ट निकाल कर **पढ़िए, औरों को पढ़ाइये, फॉरवर्ड कीजिए।** देश में लॉकडाउन की स्थिति के कारण प्रज्ञा अभियान का नियमित अंक प्रकाशित नहीं हो पा रहा है।

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

E-mail: news.shantikunj@gmail.com

RNI-NO.38653/ 80

आत्मकल्याण और सामाजोत्थान के लिए
गायत्री साधना अभियान
मंत्रजप के साथ योग और तप भी आवश्यक है

सिद्धियों का आधार योग एवं तप

दैनिक संध्या वन्दन तो आत्मोत्कर्ष का नित्य कर्म है। उससे आगे जब उच्चस्तरीय साधनाओं की प्रक्रिया आरम्भ होती है तो उसमें दो धाराएँ उभरती हैं। इन्हें अन्तराल के हिमालय से निकलने वाली गंगा-यमुना कहा गया है। इसका नाम है- 1.योग 2.तप। इसका समागम जिस बिन्दु पर होता वहाँ एक नई अव्यक्त एवं अविज्ञात धारा सरस्वती के रूप में प्रकट होती है और तीर्थराज प्रयाग का माहात्म्य प्रत्यक्ष होने लगता है। योग और तप की दिव्य धाराओं का मिलन जहाँ भी हो रहा होगा वहाँ सिद्धियों की अधिष्ठात्री आत्मशक्ति का नया उपहार उपलब्ध होगा।

गायत्री के द्वारा जिन आत्मिक विभूतियों और भौतिक सिद्धियों के उपलब्ध होने का माहात्म्य बताया गया है, उन्हें तत्त्वतः योग और तप के मिलन से उत्पन्न विशिष्टताएँ एवं सफलताएँ ही कहा जा सकता है। योग से मनःसंस्थान को और तप से शरीर तन्त्र को उच्चस्तरीय गतिविधियों में रुचि लेने और उस प्रकार की गतिविधियों में रस लेने के लिए सहमत कर लेना ही साधना विज्ञान का एक मात्र लक्ष्य है।

योग से परमात्मा की प्राप्ति

गायत्री उपासना के योग पक्ष में स्वाध्याय, मनन, चिन्तन एवं ध्यान के आधार पर किये जाने वाले सभी उपचार सम्मिलित हैं जो विचारतन्त्र द्वारा किये जाते हैं और आस्थाओं को प्रभावित करते हैं।

उपासना में चिन्तन के द्वारा ईश्वर के समीप पहुँचने एवं घनिष्ठ बनाने के लिए भक्ति-भावना को विकसित करना होता है। इस घनिष्ठता को योग कहते हैं। मोटे अर्थों में योग का अर्थ होता है-जोड़ना। आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ देना ही योग है।

ध्यान के समय किसी शरीरधारी या प्रकाश प्रतिमा आदि के रूप में भी परमात्मा की धारणा की जाती है। वह एक सामयिक प्रयोजन है। वस्तुतः परमात्मा की अनुभूति अन्तःकरण में एक दिव्य संवेदना के रूप में ही होती है और उस संवेदना की व्याख्या वैयक्तिक उत्कृष्टता एवं सामाजिक उदारता के रूप में ही की जा सकती है।

देवताओं की आकृतियाँ भी सद्गुणों के समुच्चय के रूप में ही गढ़ी गई हैं। उसके साथ घनिष्टता बनाने का तात्पर्य है दैवी गुणों को अपने व्यक्तित्व की गहराई में समाविष्ट करना। जिसकी आस्थाओं में उत्कृष्टता का जितना अधिक समावेश हो सके, समझना चाहिए कि उसने उतने ही परिमाण में भक्ति साधना की ईश्वर प्राप्ति की मंजिल पूरी कर ली। ईश्वर के ढाँचे में ढल जाना, उसके आदेशों की नीति-मर्यादाओं का पालन करना ही वह आत्म-समर्पण है, जिसे योगदर्शन में अनेक प्रकार से समझाया जाता है। समस्त योग साधनाओं का मूल उद्देश्य एक है कि ईश्वर को, अर्थात् उत्कृष्टता को इतना आत्मसात कर लिया जाय कि व्यक्तित्व में उसी की प्रधानता परिलक्षित होने लगे।

> *"ईश्वर के ढाँचे में ढल जाना, उसके आदेशों की नीति-मर्यादाओं का पालन करना ही वह आत्म-समर्पण है, जिसे योगदर्शन में अनेक प्रकार से समझाया जाता है।"*

आत्मबल अभिवर्धन के लिए तप

तप पक्ष में उन क्रिया-कलापों की गणना होती है, जिसमें शरीर के विभिन्न अवयवों को अनभ्यस्त रीति-निति अपनाने के लिए अभ्यस्त कराया जाता है। इस प्रयत्न को तितीक्षा भी कह सकते हैं।

महानता के मार्ग पर चलने वाले हर व्यक्ति को आदर्शवादी निष्ठा का प्रमाण देने के लिए जीवनभर तरह-तरह की कठिनाइयों से जूझना पड़ा है। इस कसौटी पर खरे उतरने के उपरान्त ही किसी को श्रेष्ठता का आत्मसन्तोष और लोक-सम्मान मिल सका है। तप-तितीक्षा की साधना में अनेक प्रकार के संयम बरतने पड़ते हैं और सत्प्रयोजनों के लिए बढ़-चढ़कर अंशदान करने पड़ते हैं। विरोध सहन का भी साहस दिखाना पड़ता है। यह समस्त प्रयोगक्रम तप -साधना कहलाता है। इसे प्रकारान्तर से आत्मबल के अभिवर्द्धन का अभ्यास ही कहा जा सकता है।

समग्र, सर्वांगपूर्ण गायत्री साधना

उपासनाओं में गायत्री साधान का स्थान सर्वोपरि माना जाता है। इसका एक कारण यह भी है कि वह अपने आप में समग्र, सर्वांगपूर्ण है। अन्य उपासनाओं को मत, सम्प्रदाय एवं परम्परागत मान्यताओं के कारण ख्याति भले ही मिल गयी हो, पर इसमें समग्रता के तत्त्व कम ही पाये जाते हैं। दूध तो अन्य पशुओं का भी उपयोगी ही होता है, पर गाय के दूध में लगभग वे ही विशेषताएँ पायी जाती हैं जो नारी के दूध में होती हैं। इसलिए किसी पक्षपात के करण नहीं, गुणों के कारण ही गौ-दुग्ध को प्रमुखता दी जाती है। गायत्री उपासना के सम्बन्ध में भी यही बात है। इसलिए अन्यान्य उपासनाओं में रुचि लेने वाले साधकों तक के लिए शास्त्र का परामर्श यह है कि वे गायत्री उपासना को तो अपनाये ही रहें, इसके अतिरिक्त वे अन्यान्य देवोपासना भी कर सकते हैं।

गायत्री उपासना व्यक्तित्व में सत्प्रवृतियों का समावेश करने की साधना है। उसके कितने ही प्रयोग एवं प्रकार हैं। इस समस्त समुच्चय का वर्गीकरण, विश्लेषण, विवेचन करने पर दो ही तथ्य सामने आते हैं-मन को योगी और शरीर को तपस्वी बनाना। अर्थात् दोनों को उत्कृष्टता एवं आदर्शवादिता अपनाने के लिए प्रशिक्षित करना, अनुकूल बनाना और रुचि लेने की स्थिति तक पहुँचाना। यह समग्र उत्कर्ष ही भौतिक समृद्धियाँ और आत्मिक विभूतियाँ मिलने का एकमात्र उपाय है। तत्वदर्शियों द्वारा उपासना की समूची प्रक्रिया इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए विनिर्मित की गई है। भ्रान्तियों में उलझा जाय तो बात दूसरी है, अन्यथा इस दिशा में किया गया परिश्रम निश्चित रूप से हर दृष्टि से हर किसी के लिए उपयोगी ही सिद्ध होता है। उपासना का वातावरण जहाँ भी बनेगा, वहाँ शालीनता की दिशा में अन्तःप्रवृतियों के ढलने का और सज्जनता की परम्परा चल पड़ने का क्रम निश्चित रूप से चल पड़ेगा ।

एक प्रभावशाली आन्दोलन

समाज में गायत्री के तत्त्वज्ञान और साधना विधान को लोकरुचि का अंग बनाया जा सके तो उसकी प्रतिक्रिया व्यक्तियों का स्तर उत्कृष्टता की ऊँचाई में उछाल देने जैसा ही हो सकता है। कहना न होगी कि मनःस्थित के सुधरते ही परिस्थितियाँ सुधरती हैं। व्यक्तियों का समूह ही समाज है। व्यक्तिगत निकृष्टता की परिणति ही अनेकों समस्याओं और विपत्तियों के रूप में सामने आती हैं। तात्कालिक सुधार के लिए अन्य उपाय भी हो सकते हैं, किन्तु विपन्नता की जड़ काटने का एक ही मार्ग है कि जन-समाज में शालीनता की परम्पराएँ चल पड़ें। बौद्धिक श्रेष्ठता बढ़ाने के लिए सुविधा सम्वर्द्धन और बौद्धिक प्रशिक्षण की बात सोची जा सकती है। सो है तो वह ठीक, किन्तु इन प्रयत्नों में तब तक अधूरापन ही बना रहेगा जब तक कि अन्तःकरण की गहराई में उतरकर अस्थाओं को उत्कृष्ट बनाने को भी अनिवार्य न माना जाए। आस्थारहित सम्पन्नता अन्ततः वैसी ही अनिष्टकर हो सकती है जैसी कि बढ़ती हुई सुविधाएँ और शिक्षा के साथ-साथ बढ़ती हुई विपत्ति की विभिषिका इन दिनों सामने खड़ी है।

> *"अन्यान्य उपासनाओं में रुचि लेने वाले साधकों तक के लिए शास्त्र का परामर्श यह है कि वे गायत्री उपासना को तो अपनाये ही रहें, इसके अतिरिक्त वे अन्यान्य देवोपासना भी कर सकते हैं।"*

उपासना
कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- उपासना का बाह्य स्वरूप ऐसा है जिससे कभी-कभी यह भ्रम होने लगता है कि यह किसी देवता से कुछ याचना करने के लिये गिड़गिड़ाहट जैसी कोई क्रिया है। साथ ही यह भ्रम होता है कि सम्भवतः देवताओं की मनोवृति प्रशंसा और उपहार पाकर प्रसन्न हो जाने और बदले में उपासक को मनचाहा देने लगने जैसी होगी। यह दोनों ही मान्यताएँ भ्रमपूर्ण हैं। तथ्य यह है कि उपासना का उपचार व्यक्तित्व के अन्तराल की गहरी पर्तों को प्रभावित करता है और भाव-संस्थान में उत्कृष्ट तत्वों का आरोपण, अभिवर्धन करते हुए साधक की आत्मसता में प्रखरता भर देता है। यह प्रखरता ही मनुष्य की वास्तविक सम्पति है। उसी के आधार पर व्यवहार में शालीनता और कुशलता बढ़ती है।
- उपासना किसी दूसरे की नहीं, वस्तुतः अपने ही अन्तराल की करी जाती है। भीतर से सन्त उगता है तो बाहर उसका विस्तार सिद्ध रूप में परिलक्षित होता।
- पूजा उपचार में काम आने वाली प्रक्रियायें प्रकारान्तर में साधक की चेतना पर यही संस्कार डालती हैं कि उसके चिन्तन एवं अभ्यास को आर्दशवादिता की विचारधारा में ही बहना और बढ़ना चाहिए ।

गायत्री का तत्वज्ञान और विधान योगपरक चिन्तन और तपपरक अभ्यास की भली प्रकार पूर्ति कर देता है। इसका जितना अधिक विस्तार होगा उसी अनुपात से व्यक्ति की श्रेष्ठता और समाज की सुव्यवस्था बढ़ती चली जायेगी। युग परिवर्तन का अभियान इसी लक्ष्य तक पहुँचने के लिए है। मोटी दृष्टि से देखने पर पूजा-पाठ की बात छोटी-सी प्रतीत होती है, किन्तु यदि उसको विशिष्टता और सम्भावना की दृष्टि से देखा जाय तो प्रतीत होगा कि युग-समस्याओं के समाधान की, उज्ज्वल भविष्य के निर्माण की आवश्यकता पूरी कर सकने की क्षमता आस्थाओं का स्पर्श करने वाली युगक्रान्ति से ही सम्भव हो सकेगा। यह समस्त सम्भावनाएँ गायत्री अभियान में पूरी तरह सन्निहित हैं।

वाङ्मय खण्ड 3/'उपासना-समर्पण योग' से संकलित, सम्पादित

'जान भी-जहान भी' जान रहे सुरक्षित, जहान रहे व्यवस्थित
उक्त कथन का मर्म समझने और स्वधर्म निभाने का यही समय है

संकट के समय आत्मरक्षा का महत्त्व समझाने के क्रम में अक्सर कहा जाता है कि 'जान है तो जहान है।' इस सूत्र की अनुभूति जन-जन को कोरोना विषाणु जनित संकट ने एक बार फिर से करा दी है। यह अनुभूति बहुधा व्यापक संकटों के समय आपदाग्रस्त क्षेत्र के नर-नारियों को होती है। कच्छ (गुजरात) के भूकम्प में तथा उड़ीसा के सुनामी प्रभावित क्षेत्रों में आपदा प्रबन्धन दल के सदस्यों के सामने ऐसे उदाहरण आये थे। जिनके निवास पूरी तरह ढह गये या समुद्री लहरों में बह गये, ऐसे गृह-विहीन व्यक्तियों ने बड़ी प्रसन्नता के साथ अपनी कथा-गाथा सुनाई थी। साधनों के भीषण विनाश के दुःख के ऊपर उनके सुरक्षित बच जाने की प्रसन्नता के भाव उनके चेहरों पर स्पष्ट दिखाई देते थे। और वे पूरे उत्साह के साथ मिशन के बचाव कार्यों में सक्रिय भागीदार बन जाते थे।

कोरोना संकट के समय भी ऐसी ही अनुभूतियाँ जन-जन को हुईं। बड़ी संख्या में लोगों के आवश्यक कार्य और व्यापार एक बारगी रुक गए। उनमें अमीर, ग़रीब, उद्योगपति एवं श्रमिक आदि सभी वर्गों के नर-नारी शामिल थे। वे सभी कार्य व्यवस्था रुक जाने के होने वाले नुकसान का रोना रोने की जगह समय पर सही कदम उठाने से मिली आत्म सुरक्षा के कारण प्रसन्न थे। यही नहीं, काल चक्र द्वारा थोप दिए गए इस अभाव के बीच भी उनकी मानवीय संवेदनाएँ जाग्रत् और सक्रिय हो गईं। अभावग्रस्तों के लिए आहार एवं अन्य आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराने के प्रयास उदारतापूर्वक किए जाने लगे। 'जान है तो जहान है।' के सूत्र की व्यावहारिक अनुभूति सभी को हुई। इस मानवीय संवेदना की परीक्षा में लगभग सभी उत्तीर्ण हो गए। विश्व भर के सामाजिक विश्लेषकों ने इसके लिए भारत की सरकार और जनता दोनों की भरपूर सराहना भी की।

अगली परीक्षा

बाढ़, भूकम्प जैसी आपदाएँ थोड़े समय के लिए ही आती हैं और फिर शान्त हो जाती हैं। जो नुकसान होना होता है, वह एक ही झटके में हो जाता है, फिर तो उनके समाधानों के लिए ही प्रयास किए जाते हैं। कोरोना जनित संकट उन सबसे भिन्न है। उसके विनाशकारी आक्रमण का क्रम अभी रुका नहीं है, बल्कि उसके और घातक होने की आशंका निरन्तर बनी हुई है। इसलिए 'जान है तो जहान है।' के नाते जहान-संसार के आर्थिक चक्र को अधिक समय तक रोक कर नहीं रखा जा सकता। इसलिए भारत के प्रयास को और विचारकों ने 'जान भी और जहान भी' का विवेक संगत व्यावहारिक सूत्र प्रस्तुत किया है। इसका अर्थ यह है कि हमारी सरकारों और जनता को अब दुहरे मोर्चे पर लड़ने का साहस और कौशल दिखाना है। उसकी विवेचना कुछ इस प्रकार की जा सकती है।

कोरोना का घातक प्रहार अभी रुका नहीं है, इसलिए हमें अपनी जान बचाकर रहने की सावधानी तो निरन्तर बरतनी ही है। साथ ही परिवारों, संस्थानों और राष्ट्र के अर्थतंत्र का पहिया भी घुमाना है, जिससे हमें अर्थाभाव के अभिशाप न झेलने पड़ें।

इन दोनों अनिवार्य उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हमें विवेकपूर्ण निर्णय और साहस तथा संयमपूर्ण आचरण करते रहने की संतुलित रीति-नीति काफी लम्बे समय तक अपनाये रखनी होगी। इसी को युगऋषि द्वारा घोषित

विचार क्रान्ति और नैतिक क्रान्ति का सामयिक, व्यावहारिक प्रयोग भी कहा जा सकता है।

विवेकपूर्ण निर्णय :- सरकारों और प्रशासक तंत्र ने समय पर पूर्ण प्रतिबन्ध लागू करने का निर्णय लिया था, जिसे जनता ने पूरी सदाशयता से अंजाम दिया। फलस्वरूप भारत जैसे सघन आबादी वाले देश में कोरोना के संक्रमण को अन्य प्रभावित देशों की अपेक्षा अधिक कुशलता से नियंत्रित किया जा सका। अब वैसा ही विवेकपूर्ण निर्णय यह लिया गया है कि आत्मरक्षा के लिए लगाए गए प्रतिबन्धों को धीरे-धीरे ढीला करके आर्थिक तंत्र के पहिये को भी धीरे-धीरे गति दी जाय।

साहस तथा संयमपूर्ण आचरण :- अब जनता के साहस और संयम की अगली बड़ी परीक्षा सामने है। कठोर प्रतिबन्धों का पालन तो लोग कुछ अपने हित तथा कुछ प्रशासन के भय के नाते निभा लेते हैं। अब जब प्रशासन ने ढील दे दी है तब वह भय तो समाप्त हो गया, लेकिन कोरोना संक्रमण का भय तो टला नहीं है। अब जनता को विवेकपूर्ण आत्मरक्षा और आर्थिक प्रगति के संयुक्त उद्यम को सावधानी से चलाना है।

साहस यह दिखाना है कि हम विषमताओं के बीच भी प्रगति के प्रयोग करें। संयम यह दिखाना है कि आर्थिक आमदनी के आकर्षण में कहीं कोरोना से बचने के अनुशासनों का पालन करने में किसी प्रकार की मर्यादा न तोड़ें।

ध्यान रहे :- यदि हम साहस नहीं दिखाएँगे तो हमारी अर्थ व्यवस्था पिछड़ जाएगी, जिसके दुष्परिणाम हमें ही झेलने पड़ेंगे। यदि हम संयम नहीं बरतेंगे तो कोरोना के घातक आक्रमण को न्योता दे देंगे। वह स्थिति आयी तो सरकार हमारे क्षेत्र को पुनः पूर्ण प्रतिबन्ध वाले क्षेत्र (रेड ज़ोन) में शामिल कर देगी। फिर से सारी गतिविधियाँ रोक देनी होंगी।

इसलिए हमें हर हालत में बहुत जागरूक रहकर इस समय अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों को सँभालना होगा। कोरोना के भय से अपनी प्रगतिशील आर्थिक गतिविधियों को रुका भी न रहने दें तथा अपनी आय या प्रगति के नशे में आत्मरक्षा के अनुशासनों की उपेक्षा भी न होने दें। यह कार्य आसान तो नहीं है, किन्तु भारतीय जीवन पद्धति में जो तप एवं संयम के संस्कार ऋषियों-मनीषियों द्वारा पिरो दिए गए हैं, उनके नाते हम यह विशेष जिम्मेदारी शानदार ढंग से निभा भी सकते हैं।

यह बहुत महत्वपूर्ण है

इस प्रकार विवेकपूर्ण संयम एवं साहस का निर्वाह करना हम सबके व्यक्तित्वों, परिवारों और समाज की उन्नति के लिए बहुत ज़रूरी है। इससे भी आगे ईश्वरीय योजना के अनुसार भारत को पुनः विश्वगुरु, विश्व के अग्रणी की भूमिका में लाने के लिए भी संयम और साहस ज़रूरी है। यदि प्रत्येक भारतीय नागरिक इस समय अपनी आध्यात्मिक विरासत के नाते इस परीक्षा को उत्तीर्ण करने के लिए कमर कस ले, तो वह आत्मकल्याण के प्रयोग के साथ ही विश्वकल्याण की साधना का भी लाभ पा सकेगा।

मनुष्य द्वारा अपनी भौतिक प्रगति तथा सुख-सुविधाएँ अनगढ़ ढंग से बढ़ाते रहने के फलस्वरूप ही विश्व के ऊपर विनाश के बादल मंडराने लगे हैं। बढ़ते अपराध, बढ़ते युद्धोन्माद, बढ़ते प्रदूषण, बढ़ती जनसंख्या आदि के कारण वसुधा का संतुलन (इकॉलॉजिकल बैलैंस) बिगड़ने लगा है। इन्हें ठीक करके मानवीय सभ्यता और संस्कृति को दीर्घकाल तक बनाये रखने के लिए यह अनिवार्य हो गया है कि लोग अपनी अनगढ़ हविशों से बचें और विवेकपूर्ण साहस और संयम को अपनाते हुए 'जान को सुरक्षित' और 'जहान को व्यवस्थित' बनाने के शुभ प्रयोग शुरू कर दें। क्रमशः उन्हें बढ़ाते हुए उस स्तर तक ले आयें, जहाँ मनुष्य की आवश्यकताओं और प्रकृति के संतुलन के साथ सुसंगति बिठाई जा सके।

कोरोना संकट ने अपनी भौतिक सामर्थ्य के नशे में भूली मानव जाति को एक बार फिर से सद्विवेकयुक्त संयम साधना का महत्त्व समझा दिया है। भारत इस कार्य में विश्व समाज के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शक (मेण्टर) की भूमिका निभा सकता है। हम लोगों को प्रत्यक्ष दिखा सकते हैं कि हमारी जान भी सुरक्षित है तथा जहान भी व्यवस्थित तथा प्रगतिशील है। यह पहल ईश्वरीय योजनानुसार आदर्श विश्व-व्यवस्था का ठोस आधार बनाने में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

व्यक्ति जब केवल अपने बारे में सोचता है तो मोहग्रस्त होकर आदर्शों को भूल भी जाता है। लेकिन जब वह स्वयं को किसी महान प्रयोजन से जोड़ लेता है तो आदर्शों का निर्वाह कठिन परिस्थितियों में भी कर लेता है। इस प्रकार परमार्थ भाव के कारण उसके अपने स्वार्थ भी निभ जाते हैं। इसीलिए युगऋषि ने लिखा है कि परमार्थ में ही हमारा सच्चा स्वार्थ सन्निहित रहता है। इसलिए वर्तमान समय में हममें से हर एक को स्वार्थ और परमार्थ की समन्वित साधना का साधक मानकर तदनुसार सन्तुलित गतिविधियाँ अपनानी चाहिए।

छोटी-छोटी आदतों को बदल देने से हो सकते हैं बड़े-बड़े बदलाव

क्या हम जानते हैं कि कपड़े धोने की आदत को बदल दिया जाय तो समुद्र का प्रदूषण 30 प्रतिशत तक कम हो सकता है।

समुद्र में बढ़ता जा रहा प्रदूषण जलीय जीवों के लिए अत्यंत घातक है, इससे प्राकृतिक असंतुलन बढ़ रहा है। लेकिन विज्ञान पत्रिका पीएलओएस वन में प्रकाशित एक शोध अनुसंधान के अनुसार यदि लोगों की कपड़े धोने की आदत को बदला जा सके तो इस प्रदूषण में 30% तक कमी आ सकती है।

यह शोध ब्रिटेन की नॉर्थ अंब्रिया यूनिवर्सिटी के शोधकर्त्ताओं ने डिटर्जेण्ट बनाने वाली एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी के साथ मिलकर की है। इसमें वैज्ञानिकों ने कपड़े धोने के लिए प्रयोग किए जाने वाले पानी की मात्रा और अन्य कारकों का अध्ययन किया है। उन्होंने कपड़े धोते समय उनसे अलग होने वाले माइक्रो फाइबर (सूक्ष्म तंतु) को समुद्री प्रदूषण का बड़ा कारण बताया और उसे कम करने के उपाय भी सुझाए।

वैज्ञानिकों का मानना है कि आमतौर पर 40 डिग्री सेल्सियस तापमान वाले पानी में 85 मिनट तक कपड़े धोए जाते हैं। इससे हर बार एक कि.ग्रा. कपड़े धोने पर 114 मि.ग्रा. माइक्रो फाइबर अलग होते हैं, जो नाली व नदियों के रास्ते समुद्र में पहुँचते हैं।

वैज्ञानिकों का कहना है कि कपड़े धोने की आदत को बदल दिया जाय, 15 डिग्री सेल्सियस तापमान पर (यूरोपय देशों के लिए) 30 मिनट कपड़े धोए जाएँ तो इन माइक्रो फाइबर्स के अलग होने में 30% तक कमी आ जाएगी, जो समद्र के प्रदूषण को कम करने में बड़ी भूमिका निभा सकती है। (भारत में गर्म पानी की बजाय सामान्य ठंडे पानी का प्रयोग हो।) वैज्ञानिकों ने बार-बार कपड़े धोने की बजाय एक बार अधिक मात्रा में कपड़े धोने की सलाह दी है। उनका कहना है कि कम पानी में अधिक कपड़े धुलेंगे तो माइक्रो फाइबर्स भी कम अलग होंगे। आज के युग में पानी बचाने के लिए भी यह अत्यावश्यक सुझाव है।

(दैनिक जागरण, 8 जून 2020 में प्रकाशित समाचार के आधार पर)

गायत्री जयन्ती, गंगा दशहरा और परम पूज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस

युगऋषि के सहयोगी बनो, युगशक्ति को धारण करो, युगचेतना का विस्तार कर प्रतिकूलताओं को निरस्त करो

श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर साहब गायत्री, गंगा और गुरुसत्ता का पूजन करते हुए

समारोह नहीं, सादगी और सुरक्षा के साथ मना पर्व

सामान्य दृष्टि से तो इस वर्ष गायत्री जयंती, गंगा दशहरा और परम पूज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस देश में लॉक डाउन की प्रतिकूल परिस्थितियों में मनाया गया। लेकिन साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा जैसे आध्यात्मिक प्रयोगों के लिए यह परिस्थितियाँ पहले से कहीं अनुकूल थीं।

परिजन शान्तिकुञ्ज न आ सके, अपनी शक्तिपीठों में पर्व समारोह न मना सके, परन्तु उस मन-मंदिर, जहाँ साक्षात गायत्री माता विराजमान है, में झाँकने का जो अवसर मिला वह अद्वितीय था। श्रद्धा प्रगाढ़ हुई, लाखों लोगों को प्रेरणा-प्रवाह में गोते लगाने का अवसर मिला। इसीलिए तो इस वर्ष एक वर्षीय अभियान साधना के लिए जितनी अधिक संख्या में लोगों ने संकल्प लिए हैं वह अभूतपूर्व है।

शान्तिकुञ्ज में गायत्री जयन्ती पर अखण्ड जप, यज्ञ, दर्शन, प्रणाम जैसे क्रम दैनंदिन जीवन की तरह ही आश्रमवासियों ने अपने घर पर ही रहकर पूरे किए। श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी ने पर्व पूजन किया, संदेश दिया, जिसका ऑनलाइन प्रसारण किया गया। आश्रमवासियों के लिए कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए सामाजिक दूरी, मास्क जैसे नियमों का पालन करते हुए बड़ी एलईडी स्क्रीन के माध्यम से दिखाने की व्यवस्था की गई थी।

दो दिन पूर्व सामूहिक उद्घोषणा प्रणाली से अंतेवासी कार्यकर्ताओं की एक गोष्ठी हुई, जिसे आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी, डॉ. बृजमोहन गौड़ एवं श्री कालीचरण शर्मा जी ने सम्बोधित किया।

सविता का तेज सधे, देवत्व बढ़े, सन्मार्गगामी हो साधना

श्रद्धेया शैल जीजी

गायत्री जयन्ती का संदेश देते हुए श्रद्धेया शैल जीजी ने गायत्री मंत्र को चेतना के उत्कर्ष का मंत्र बताया। उन्होंने कहा कि जब पाण्डवों ने भीष्म पितामह से पूछा कि वह कौन-सा देव है, जिसमें सारे देवता विराजमान हैं, वह कौन-सा मंत्र है जिस चाबी से सारे ताले खुल जाते हैं तो उन्होंने 'गायत्री' को ही वह देव, वह मंत्र बताया था।

श्रद्धेया जीजी ने कहा कि गायत्री जयंती वह पर्व है जिस दिन दो माताओं- गायत्री और गंगा का लोकमंगल के लिए समर्पित होने का संकल्प हुआ था। दोनों जन-जीवन का उद्धार करती हैं। गंगा भौतिक जीवन के पाप-ताप हरती है, पवित्रता का संचार करती है। गायत्री संवेदना, विचारणा और आस्थाओं का परिष्कार कर आत्मिक उत्थान करती है।

गायत्री के तीन चरण हैं। पहले चरण 'तत्सवितुर्वरेण्यं' सविता के तेज का शौर्य एवं साहस के रूप में जीवन में धारण करने की प्रेरणा देता है। दूसरा 'भर्गो देवस्य धीमहि' अंतःकरण में अच्छाइयों को-देवत्व को विकसित करना है। तीसरे चरण 'धियो यो नः प्रचोदयात्' में अंतश्चेतना और शक्तियों को कल्याणकारी दिशा देने की शिक्षा है। जीवन में तेज सधे, देवत्व की ओर बढ़े, तभी वह कल्याणकारी हो सकता है। श्रद्धेया जीजी ने कहा कि गायत्री उपासक केवल मंत्र जप ही करते रहें, इन चरणों को आत्मसात न करें तो वह केवल जीभ का व्यायाम ही रह जाएगा।

श्रद्धेया जीजी ने परम पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में उनकी गायत्री साधना और स्वयं गायत्रीमय होने तक की कई मार्मिक घटनाओं का स्मरण किया। उन्होंने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव गायत्री के लिए ही जिए और अंत में गायत्रीमय ही हो गए। हमने भगवान कृष्ण की वह बाँसुरी तो नहीं सुनी, जिसके सभी वशीभूत हो जाते थे, लेकिन पूज्य गुरुदेव की प्यार भरी वह वाणी जरूर सुनी है जिसे सुनकर हर कोई खिंचा चला आता था।

गायत्री जयंती पूर्णता पाने का दिन है। परम पूज्य गुरुदेव का स्थूल शरीर हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनका सूक्ष्म स्वरूप हमारे रग-रग में विद्यमान है। उनसे यही प्रार्थना है कि वे सबके संकल्पों को पूरा करने की शक्ति प्रदान करें।

युगशक्ति की शरण में जाना ही होगा

श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी

गायत्री सूर्य विद्या है, प्रकाश है, प्राण विद्या है। गायत्री के 24 अक्षरों में चारों वेद और ऋषियों का पावन ज्ञान भरा है। प्रकाश से मुख मोड़ लेना ही असुरता की ओर अग्रसर होना है। आज संसार में व्याप्त समस्त समस्याओं का एकमात्र कारण है कि हमने प्राण विद्या की ओर से, प्रकाश से मुँह मोड़ लिया है। हम युग की समस्याओं का समाधान चाहते हैं तो प्राण विद्या को पुनर्जीवित करना ही पड़ेगा। हमें युगशक्ति की शरण में जाना ही होगा।

गायत्री और गंगा एक ही विभूति के दो रूप हैं। एक सूक्ष्म जगत में प्रवाहित होती है, दूसरी स्थूल जगत में। गायत्री स्थूल रूप में प्राणवान बनाती है, सूक्ष्म रूप से वासना और कामनाओं का तथा कारण रूप में भावनाओं का पोषण करती है, उन्हें शुद्ध बनाती है। आज तीनों ही जर्जर होती जा रही हैं। इन्हें पुष्ट करने के लिए हमें अपनी प्राण विद्या को पुनर्जीवित करना होगा।

गायत्री-गंगा का अवतरण सहज नहीं है। ऋषि विश्वामित्र, भगीरथ और परम पूज्य गुरुदेव को इसके लिए कठोर तप करना पड़ा है। साधक को गायत्री साधना की सिद्धि नीर-क्षीर विवेक के रूप में होती है।

भगवान हमारे बीच आते हैं लेकिन उनकी अनुभूति नहीं हो पाती। इस अनुभूति के लिए, भगवान को देखने के लिए दृष्टि चाहिए, श्रद्धा चाहिए, जो गायत्री उपासना से विकसित होती है। अतः उस दृष्टि के लिए, उस भाव-संवेदना के जागरण के लिए, अपने प्राणों को पुष्ट करने के लिए गायत्री उपासना कीजिए। हम सबका भविष्य बहुत उज्ज्वल है।

गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

गायत्री परिवार के सभी परिजनों से निवेदन

शान्तिकुञ्ज परिवार के सभी वरिष्ठ (ट्रस्टी, कार्यकारिणी, व्यवस्था समिति आदि के) सदस्यगण सदा की तरह एक मत, एकजुट होकर पूज्य गुरुदेव के नवसृजन अभियान को गतिशील बनाने के लिए निष्ठापूर्वक जुटे हुए हैं। कहीं किसी प्रकार का मतिभ्रम नहीं है।

क्षेत्र के कुछ लोग शंकाओं-कुशंकाओं में उलझकर नाना प्रकार के भ्रम फैला रहे हैं। नैष्ठिक परिजन उनसे भ्रमित न हों। वर्तमान विसंगतियों का समाधान गुरुकृपा से शीघ्र ही हो जाएगा। सभी परिजन पूज्य गुरुदेव के मिशन के प्रति श्रद्धा-निष्ठा-सक्रियता बनाये रखकर, अपने-अपने कार्यक्षेत्र में निर्धारित कार्यक्रमों को नयी बुलन्दियों तक पहुँचाने के प्रयास करते रहें।

नैष्ठिक परिजनों के ऐसे ही सत्पुरुषार्थ के परिणामस्वरूप 31 मई के 'गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान' ने नए कीर्तिमान बनाए हैं। एक वर्षीय अभियान साधना ने भी तूफानी गति पकड़ ली है। ऐसे ही स्नेह-सहकारयुक्त सत्पुरुषार्थ की गरिमामय परम्परा बनाए रखें।

सभी के लिए हार्दिक मंगलकामना सहित,

शिवप्रसाद मिश्रा
कृते, शान्तिकुञ्ज व्यवस्था समिति

सिलीगुड़ी जोन में 5000 पेड़ लगाए

सिलीगुड़ी। प. बंगाल

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता के लिए 31 मई का दिन एक मील का पत्थर था। इस पर्व को ऐतिहासिक बनाने में सिलीगुड़ी शाखा ने बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सिलीगुड़ी के प्रमुख कार्यकर्ता श्री विजय अग्रवाल ने 31 मई को पूरे सिलीगुड़ी जोन में 5000 पेड़ लगाने का संकल्प लिया था। तदनुसार तैयारियाँ की गईं। सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने इस भागीरथी संकल्प को पूरा करने में अपना योगदान दिया।

परिन्दों की सुध ले रहे हैं मथुरा, उ.प्र. के युवा

वृक्षगंगा अभियान

31 मई 2020 — गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता का 500वाँ वृक्षारोपण सप्ताह

उवारसद, गाँधीनगर (गुजरात) और दिल्ली में वृक्षारोपण करते नवयुवक

कोलकाता। प. बंगाल

प्रतिकूल परिस्थितियों में जो धैर्य, सूझबूझ और साहस के साथ आगे बढ़ते जाते हैं वे हर सफलता-असफलता के साथ एक नई शक्ति और नया आत्मविश्वास प्राप्त करते जाते हैं। गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता का 500वाँ वृक्षारोपण सप्ताह कुछ ऐसी ही उपलब्धियों भरा था। पिछले 499 सप्ताह में जीपीवायजी ने लगभग 55000 पौधे रोपे थे, लेकिन 500वें सप्ताह में एक ही दिन में पूरे विश्व में लगभग एक लाख पौधे रोपे गए।

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता का वृक्षारोपण अभियान 7 नवंबर 2010 से चल रहा है। इस सतत अभियान के 251वें, 300वें, 400वें सप्ताह जैसे पड़ावों पर बड़े सार्वजनिक समारोह भी आयोजित होते रहे। उन दिनों में सैकड़ों पौधों का रोपण किया गया। लेकिन 500वाँ वृक्षारोपण सप्ताह देश में लॉक डाउन की परिस्थितियों में आया। कोई सार्वजनिक कार्यक्रम संभव नहीं था। अतः ऑनलाइन प्रचार कर देश-विदेश की हर शाखा, हर परिजन से इस दिन पौधे लगाकर इस दिन को यादगार बनाने का आह्वान किया गया।

शाखा कार्यवाहक एवं अभियान संयोजक श्री रवि शर्मा ने बताया कि ऑनलाइन पंजीयन के माध्यम से लगभग 65000 पौधे एक ही दिन में लगाने के संकल्प उन्हें प्राप्त हुए थे। लेकिन उस दिन देश-विदेश में गायत्री यज्ञ के बाद लगभग एक लाख लोगों ने पौधे रोपे।

अनेक लोगों ने प्रतीकात्मक रूप से गमलों में पौधे रोपे, जिन्हें अनुकूल वातावरण एवं अनुकूल परिस्थितियों में सही स्थान पर स्थानान्तरित कर दिया जाएगा।

देश-विदेश में रोपे गए लगभग एक लाख पौधे

शान्तिकुञ्ज की भागीदारी

श्रद्धेय डॉक्टर साहब, जीजी द्वारा पूजन डॉ. चिन्मय जी द्वारा वीडियो संदेश

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने भी गायत्री जयन्ती के दिन वृक्ष पूजन का इस अभियान को अपना आशीर्वाद दिया। इस पूजित वृक्ष को शान्तिकुञ्ज प्रांगण में रोप दिया गया।

डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने इस महान अभियान को वीडियो संदेश के माध्यम से अपना आशीर्वाद दिया। इसमें उन्होंने वृक्षों के उपकारों का पुनःस्मरण कराते हुए सभी से एक-एक वृक्ष अवश्य लगाने का आग्रह भी किया था।

कुछ अन्य स्थानों के समाचार

दिल्ली : 31 मई को दिया, दिल्ली के सतत वृक्षारोपण अभियान का 59वाँ रविवार था। गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता का यह 500वाँ सप्ताह होने के कारण एक विशेष अवसर भी था। इस उपलक्ष्य में दिया के कई सक्रिय सदस्यों ने बड़ी संख्या में पौधे लगाए।

101 पौधे रोपे

31 मई को ही गायत्री परिवार यूथ ग्रुप अहमदाबाद ने अपने सतत वृक्षारोपण सप्ताह का 101वाँ सप्ताह मनाया। इसे उन्होंने कोलकाता के बृहद वृक्षारोपण अभियान में भागीदारी स्वरूप समर्पित करते हुए उवारसद, गाँधीनगर में 101 पौधे रोपे।

31 मई 2020

- घोषित संकल्प 10,00,000 घरों से कहीं अधिक घरों में हुए यज्ञ।
- कोरोनावायरस संकट से मुक्ति की चाह ने बढ़ाया उत्साह। इस हेतु हर घर में हुई प्रार्थनाएँ।
- मिशन से अपरिचित हजारों लोगों ने की भागीदारी, गायत्री परिवार के परिजनों से सम्पर्क कर विधि-व्यवस्था समझी, सीखी और यज्ञोपरान्त सोशल मीडिया पर अपने यज्ञ के फोटो पोस्ट करते हुए गौरव का अनुभव किया।
- प्रतिकूल परिस्थितियों में देव संस्कृति के नए-नए सूत्र मिले। पुरोहितों की प्रत्यक्ष उपस्थिति के बिना भी लोगों में देखा गया जबरदस्त उत्साह।
- मोबाइल पंडित, पुस्तकों से यज्ञ करने जैसे नए प्रयोगों ने लोगों में बढ़ाया आत्मविश्वास। दैनंदिन जीवन में स्वयं यज्ञ करने के संकल्प उभरे।
- अनेक सामाजिक-धार्मिक संगठनों का प्रशंसनीय सहयोग मिला।

संस्कार अभिसिंचन

ऊपर छिन्दवाड़ा (म.प्र.) में और नीचे एडीलेड (ऑस्ट्रेलिया) में यज्ञ में भाग लेकर उत्साहित हो रह हैं बच्चे

मध्य प्रदेश में संगठित प्रयासों को मिली शानदार सफलता

51,000

छिंदवाड़ा। मध्य प्रदेश

छिन्दवाड़ा जिले के लगभग 51 हजार घरों में गायत्री यज्ञ संपन्न हुए। सभी धार्मिक, सामाजिक संगठनों एवं गायत्री परिजनों के सहयोग से यह महान सफलता संभव हो सकी। इस अवसर पर नशा नहीं करने एवं वृक्षारोपण करने का संकल्प लिया गया।

जिला गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ उपासना जिला प्रभारी श्री अरुण पराड़कर ने बताया कि 31 मई तंबाकू निषेध दिवस, जिले में साप्ताहिक वृक्षारोपण का 99वाँ सप्ताह एवं महेश नवमी का पावन अवसर था। अतः नशामुक्ति एवं विश्व कल्याणार्थ पर्यावरण संरक्षण का प्रबल संदेश दिया गया। प्रत्येक विकासखंड के सभी गाँवों में गायत्री परिवार एवं अन्य सहयोगी के माध्यम से लॉकडाउन का पालन करते हुए जिले में लगभग 51हजार घरों में यज्ञ संपन्न हुए। उनका विधिवत पंजीयन भी किया गया है। 24 बार गायत्री मंत्र एवं 5 महामृत्युंजय मंत्र की आहुतियाँ समर्पित करते हुए कोविड-19 के फ्रंटलाइन योद्धाओं की स्वास्थ्य रक्षा की मंगल कामना की गईं। इस आयोजन को लेकर गायत्री परिवार द्वारा मोबाइल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया गया जिसमें स्कूल के बच्चों धार्मिक संस्थाओं सामाजिक संस्थाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और उत्साह और उमंग के साथ अपने-अपने घरों में यज्ञ कर सबके मंगलमय जीवन की प्रार्थना की गई।

याजकों ने संकल्प लिए
- **नशा न करने के**
- **वृक्षारोपण के**

नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प लेते नवयुवक

33,540

उज्जैन। मध्य प्रदेश

उज्जैन के नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं, भली चाह और भली सोच रखने वाले सामाजिक संगठनों और धर्मप्राण प्रजाजनों ने 31 मई 2020 को विश्व स्तरीय गृहे-गृहे यज्ञ अभियान में बड़ी श्रद्धा और सद्भावना के साथ भाग लिया। स्थानीय मीडिया प्रभारी श्री देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव के अनुसार जिले के कुल 33,540 घरों में यज्ञ यज्ञ हुआ। उज्जैन 14,800 , नागदा 11,000 (इनमें 1200 सुगम सैट से), खाचरोद 2850, माकड़ौन 3000, तराना 540, महीदपुर 500, बड़नगर, 450, घटिया 400 घरों में यज्ञ की अंतिम सूचना प्राप्त हुई।

बहुत सारे घरों में सोशल मिडिया के माध्यम से ज़ूम ऐप, यूट्यूब ,मोबाइल पंडित ,फेसबुक लाइव आदि के माध्यम से ही यज्ञ संपन्न कराए गए। सभी याजकों ने मानवीय दुर्बुद्धिजन्य अत्याचारों के कारण विश्व पर छाए कोरोना महामारी के निवारण और जन-जन को सद्बुद्धि प्रदान कर सन्मार्गगामी बनाने की प्रार्थना परमपिता परमात्मा से की। जिला संगठन द्वारा जिले में यज्ञ अभियान के प्रति इस जन उत्साह को युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के 30वें महाप्रयाण दिवस पर उन्हें एक शानदार श्रद्धाञ्जलि माना जा रहा है।

यज्ञमय हो गए गाँव

उज्जैन जिले के ग्राम कनासिया और आसपास के तीन-चार गाँवों में 300 से अधिक घरों में यज्ञ हुए। इसमें वरिष्ठ परिजन श्री कांतिलाल विश्वकर्मा का विशिष्ट योगदान रहा।

20,000

जबलपुर। मध्य प्रदेश

इस वर्ष कोरोना संकट के कारण गायत्री जयंती पर सार्वजनिक समारोह न हो सके। अतः गायत्री शक्तिपीठ जबलपुर ने माँ भगवती गायत्री-गंगा को उनके अवतरण दिवस एवं परम पूज्य गुरुदेव को उनके महाप्रयाण दिवस पर श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने का नया मार्ग अपनाया। उन्होंने सभी नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं और श्रद्धालुओं से अपने घर पर ही तीन माला गायत्री महामंत्र का अतिरिक्त जप करने और अपने आस-पड़ौस में ही परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित पाँच पुस्तकों का दान करने, युग साहित्य का स्वाध्याय करने का आह्वान किया। शक्तिपीठ के आह्वान पर उस दिन जलवायु एवं पर्यावरण शुद्धि तथा कोरोना वायरस की रोकथाम की विशेष प्रार्थना के साथ 20,000 से अधिक घरों में गायत्री यज्ञ सम्पन्न हुए। शहर में सभी सामाजिक संस्थानों ने एवं ग्रामीणों ने इस अभियान की भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्रीमती कविता तिवारी, गीता डोंगरे मृदुला शर्मा, श्री प्रमोद राय, सी. के मिश्रा, नरेश तिवारी, बीबी शर्मा ने सभी सहयोगियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया।

गायत्री जयंती पर्व पर भी

11000 घरों में यज्ञ, 5000 में दीपयज्ञ

सागर। मध्य प्रदेश

सागर जिले में यज्ञ अभियान को घर-घर तक पहुँचाने के लिए दो पारियों में यज्ञ की योजना बनाई थी। प्रातःकाल 11000 परिवारों ने विधिवत शक्तिपीठ पर पंजीयन कराते हुए विविध स्वरूपों में कुण्डीय यज्ञ किया। सायंकाल लगभग 5000 लोगों ने दीपयज्ञ कर वैश्विक शान्ति एवं सबके मंगल की कामना की। सागर में 2800, देवरी में 1050, मालथौन में 150, रहली में 500, गढ़ाकोटा में 150, बीना में 425, बांदरी में 51, खिमलासा में 11, खुरई में 125, शाहगढ़ में 110 और बंडा में 25 परिवारों ने यज्ञ किए।

नरसिंहपुर के केन्द्रीय कारागार में यज्ञ करते बन्दीगण

लक्ष्यवेधी अभियान, शानदार संकल्प

बुरहानपुर। मध्य प्रदेश : बुरहानपुर जिले के 50 से ज्यादा ग्रामीण क्षेत्रों में घर-घर यज्ञ हुए। देखिए कुछ विशेषताएँ -

- इस वर्ष 50,000 पेड़ लगाने के संकल्प लिए गए।
- जिले में 13 मई से चल रहे सामूहिक गायत्री महामंत्र जप अनुष्ठान की पूर्णाहुति हुई।
- याजकों को देवदक्षिणा स्वरूप व्यसनमुक्ति के संकल्प कराए गए।
- कोरोना कृमिनाशक मंत्रों के साथ विशेष आहुतियाँ दी गईं।
- नेपानगर की विधायक श्रीमती सुमित्रा कास्डेकर ने भी अपने आवास पर यज्ञ किया।

मध्य प्रदेश
(अंकों की दृष्टि में)

जिला	घर
छिंदवाड़ा	51,000
भोपाल	35,000
उज्जैन	33,540
खरगोन	21,000
हरदा	21,000
जबलपुर	20,000
सागर	16,000
आगर मालवा	10,000
बालाघाट	7000
राजगढ़ ब्यावरा	5,224
टीकमगढ़	4,058
देवास	3395
अलीराजपुर	3,008
रतलाम	2,700
नीमच	1,871
सीहोर	1,122
नीमच	1,871
रतलाम	2,700
नरसिंहपुर	2,604

(तेंदूखेड़ा के 24 गाँवों में 647 घरों में यज्ञ हुए। जिले के केन्द्रीय कारागार में भी यज्ञ हुआ।)

हरदा। मध्य प्रदेश

21,000

हरदा जिले के 21000 घरों में यज्ञ हुए। लॉक डाउन की परिस्थिति में भी प्रेरणा और याजकों के सहयोग के लिए गाँव-मोहल्ले स्तरीय समितियों का गठन किया गया था। परिणाम स्वरूप हरदा शहर में 3000 घरों में यज्ञ हुए। कोरोना संक्रमण से मुक्ति के लिए विशेष आहुतियाँ दी गईं।

आगर। मध्य प्रदेश

10,000

प्रज्ञाकुंज आमला के समन्वयक श्री मणिशंकर चौधरी के अनुसार आगर-मालवा जिले के लगभग 10,000 घरों में यज्ञ हुआ। इन यज्ञों को सम्पन्न कराने के लिए अस्थाई तौर पर व्हॉट्सएप ग्रुप बनाकर लोगों को यज्ञ की जानकारी और प्रशिक्षण दिया गया। युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री रजनीश स्वर्णकार ने बताया कि पाँच कुंतल हवन सामग्री के पैकेट्स घर-घर पहुँचाए गए थे। कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव के लिए पर्यावरण शुद्धि पर विशेष ध्यान दिया गया।

कोरोना योद्धाओं के प्रति आभार व्यक्त किया

होशंगाबाद। मध्य प्रदेश

होशंगाबाद जिले में कोरोना संक्रमण से जूझ रहे समाज गृहे-गृहे यज्ञ अभियान के प्रति गहरी आस्था थी। जिले में 11000 से अधिक घरों में यज्ञ हुए। होशंगाबाद शक्तिपीठ क्षेत्र में 2100, इटारसी में 2000, सिवनी मालवा में 1200, पिपरिया में 1500, वनखेड़ी में 1000, पचमढ़ी में 500, सेमरी हरचंद में 500, डोलरिया में 300 घरों में या हुए। श्री अनुराग मिश्र एवं श्री सुबोध बारोलिया के अनुसार पूरे जिले में जनसेवा में अग्रणी कोरोना योद्धाओं के प्रति आभार व्यक्त किया गया। सबके उत्तम स्वास्थ्य की कामना के साथ विशेष आहुतियाँ दी गईं।

विशेष समर्थन

डॉ. उपाध्याय

अखिल भारतीय विद्वत्परिषद

अखिल भारतीय विद्वत्परिषद के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. कामेश्वर उपाध्याय के द्वारा गायत्री-परिवार, हरिद्वार से संचालित कोरोना नाशक यज्ञ का अनुमोदन किया जाता है और इस संस्था के पुनीत कार्य हेतु इसे साधुवाद दिया जा रहा है।

पं. शिवपूजन जी

वैदिक एजुकेशनल रिसर्च

अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार द्वारा दिनांक 31 मई 2020 को गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ उपासना कार्यक्रम का समर्थन करता हूँ। विश्व में कोरोना वायरस महामारी से उत्पन्न संकट के समाधान हेतु यज्ञ बहुत ही प्रभावशाली प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से संपूर्ण प्रकृति को पूरे विश्व में सैनिटाइज़ किया जा सकता है। मैं काशी के सभी आचार्यों एवं पुरोहितों तथा सनातन धर्मावलंबियों से निवेदन करता हूँ कि 31 मई को प्रातः 9:00 बजे से 11:00 के बीच अपने अपने घरों में अग्निहोत्र करें।

निवेदक : पंडित शिवपूजन शास्त्री
निदेशक, वैदिक एजुकेशनल रिसर्च, सोसायटी, छित्तूपुर, लंका, वाराणसी।

गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट वाराणसी के वरिष्ठ परिजन श्री गंगाधर उपाध्याय के अनुसार पंडित शिवपूजन शास्त्री जी ने अपने प्रतिष्ठान वेद मंदिर आश्रम, छित्तूपुर में स्वयं यज्ञ किया और लगभग 700 कर्मकांडी पुरोहितों एवं आचार्यों को भी प्रेरणा देकर यज्ञ करवाया।

विप्र फाउण्डेशन का शानदार सहयोग मिला

विप्र फाउण्डेशन उदयपुर के सदस्य शान्तिकुञ्ज द्वारा प्रेरित वैश्विक यज्ञ अभियानमें भाग लेते हुए

उदयपुर। राजस्थान : अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा वैश्विक स्तर पर देव संस्कृति को पुष्ट करने के लिए किए गए आह्वान पर विप्र फाउण्डेशन के पदाधिकारियों का शानदार सहयोग और समर्थन प्राप्त हुआ। उनके द्वारा 31 मई को 11 कुंडीय नैनो यज्ञ किया गया। सभी ने नित्य अपने घर यज्ञ करने का संकल्प लिया। कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए आवश्यक सभी सावधानियों के साथ किए गए इस सामूहिक प्रयोग में विप्र फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष व मावली विधायक श्री धर्मनारायण जोशी व फाउंडेशन के मेवाड़ अध्यक्ष श्री के.के. शर्मा ने भी भाग लिया।

न्याय और परिश्रम की कमायी ही मनुष्य को सुख देती, फलती-फूलती और मन को प्रसन्न रखती है। इससे आत्मा निर्मल व पवित्र रहता है, पौरुष बढ़ता है और सत्कर्मों की प्रेरणा मिलती है। चोरी, छल व कपट से कमाया हुआ धन सदैव दुःख देता है।
– ऋग्वेद 2/13/13

गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान-उत्तर प्रदेश

कोरोना संकट से मुक्ति एवं विश्वशांति की कामना ने प्रगाढ़ की जनमानस की आस्था

लखनऊ। उत्तर प्रदेश : महानगर लखनऊ में 31 मई को सम्पन्न गृहे-गृहे यज्ञ अभियान के प्रति भारी उत्साह था। वैश्विक महामारी करोना से मुक्ति की कामना ने इस अभियान के प्रति विशेष रुचि बढ़ाई। इसके लिए विशेष मंत्र और प्रार्थना के साथ आहुतियाँ समर्पित की गईं। पूरे विश्व में कोरोना वायरस के कारण दिवंगतों की आत्मोन्नति, वैश्विक शान्ति, सद्भाव की कामना और कोरोना संक्रमण से बचने के लिए जीवनी शक्ति के अभिवर्धन, पर्यावरण शुद्धि जैसे प्रयोजनों ने लोगों की धार्मिक आस्थाओं को तो बल दिया ही, प्रबुद्धजनों को भी इस सामूहिक यज्ञ प्रयोग के लिए आकर्षित किया।

लखनऊ के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री उमानंद शर्मा ने बताया है कि गायत्री और यज्ञ लोगों के दैनंदिन जीवन के अनिवार्य अंग बनें, इसके लिए भरपूर प्रयास किए गए, लोग प्रभावित और संकल्पित भी हुए। राजधानी लखनऊ के लगभग 30 हजार घरों में यज्ञ कराने में सफलता मिली। सभी वरिष्ठ कार्यकर्तागणों ने यज्ञ अभियान के विस्तार के लिए सौंपे गए दायित्व बड़ी कुशलता से निभाए। सभी यज्ञ कार्य शासन द्वारा निर्धारित, प्रोटोकाल के तहत सोशल डिस्टेंसिंग, मास्क इत्यादि के तहत सम्पन्न हुए। मोबाइल पण्डित एप का प्रयोग विशेष लाभदायक सिद्ध हुआ।

24000 यज्ञ

लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश

लखीमपुर जिले के हर प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल, युवा मण्डल में 31 मई के घर-घर यज्ञ अभियान को सफल बनाने की भरपूर उमंग थी। सबके समन्वित प्रयासों से अपेक्षा के अनुरूप शानदार सफलता मिली। पूरे जिले में 24000 से अधिक घरों में यज्ञ हुए। यह यज्ञ प्रातः और सायं दो पारियों में आयोजित किए गए थे।

11,000 घरों में

सुलतानपुर। उत्तर प्रदेश

31 मई को जनपद सुलतानपुर के अनेक गाँवों एवं नगरों में गायत्री यज्ञ एवं उपासना का क्रम सम्पन्न हुआ। पूरे जनपद में 11000 घरों में यज्ञ सम्पन्न होने और कोरोना महामारी के निवारण हेतु विशेष आहुतियाँ दिए जाने के समाचार शान्तिकुञ्ज को प्राप्त हुए हैं। अनेक लोगो ने सूक्ष्म यज्ञ एवं दीपयज्ञ के माध्यम भी इस सामूहिक यज्ञ अभियान में भाग लिया।

झाँसी उपजोन में 11000 यज्ञ

झाँसी। उत्तर प्रदेश

कोरोना संकट और लॉकडाउन से आए ठहराव के बीच झाँसी उपजोन में गृहे-गृहे यज्ञ अभियान उत्साहवर्धक एवं उद्देश्यपूर्ण प्रतीत हुआ। पूरे उपजोन में 11050 घरों में यज्ञ हुए, जिनमें से 8350 झाँसी जनपद में, 630 ललितपुर में, 1650 जालौन में, 250 हमीरपुर और 170 महोबा जिले में सम्पन्न हुए। इन यज्ञों में कोरोना वायरस को निष्प्रभावी बनाने, वातावरण परिशोधन तथा जनमानस के कल्याण हेतु आहुतियाँ समर्पित की गईं। गायत्री प्रज्ञा पीठ प्रेमनगर के व्यवस्थापक श्री राजेन्द्र द्विवेदी के अनुसार सर्वश्री हरिकृष्ण पुरोहित, देशबन्धु तिवारी, आशाराम कुशवाहा, सीताराम इरचैइया, घनश्याम आदि के नेतृत्व में समग्र अभियान सम्पन्न हुआ।

युवा सक्रियता रंग लाई

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ नगवां, लंका, वाराणसी से जुड़े अनेक युवा मण्डलों ने गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना के विराट आन्दोलन को अपने क्षेत्र में सफल बनाने में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। मीडिया प्रभारी श्री बृजेश चौहान के अनुसार इसमें शक्तिपीठ नगवां से जुड़े नगवां, कोनिया, पांडेयपुर, छित्तूपुर, रुप्पनपुर के युवा मंडलों, शैलपुत्री युवा मंडल के भाई-बहिन शामिल थे। उन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में हवन सामग्री, समिधा व यज्ञ विधि पत्रक आदि के किट तैयार किए और यज्ञ करने वाले घरों में निःशुल्क वितरित की।

कानपुर नगर 1100, देहात 400

कानपुर। उत्तर प्रदेश

कानपुर नगर में 1100 लोगों ने गाय के गोबर के कण्डे पर विषाणु नाशक विशेष हवन सामग्री के साथ यज्ञ किया। सभी घरों में गायत्री महामंत्र के साथ सबके उत्तम स्वास्थ्य एवं सबके लिए सद्बुद्धि की कामना की गई।

यज्ञोपरान्त गायत्री परिवार द्वारा हंसपुरम् में वृक्षपूजन एवं वृक्षारोपण का कार्यक्रम रखा गया था। कानपुर नगर का यज्ञ अभियान सर्वश्री आर.सी. गुप्ता, सुरेश तिवारी, आर.पी. लाल, डॉ. संगीता सारस्वत आदि के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ।

कानपुर देहात के लगभग 400 घरों में यज्ञ हुआ। सभी ने यज्ञ भगवान से कोरोना वायरस के संक्रमण के संकट से शीघ्र मुक्ति मिले, ऐसी कामना की।

1000 घरों में यज्ञ हुए

देवरिया। उत्तर प्रदेश

देवरिया के समर्पित परिजनों के प्रबल पुरुषार्थ स्वरूप गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना अभियान को शानदार सफलता मिली। श्री अजीत शर्मा के अनुसार 1000 से अधिक घरों में यज्ञ सम्पन्न हुए।

गायत्री जयंती-गंगा दशहरा के पावन अवसर पर परमहंस प्रज्ञा मंडल एवं माँ शारदा महिला मंडल, न्यू कॉलोनी, चकिया रोड, देवरिया द्वारा वृक्षारोपण अभियान चलाया गया।

सरसावा, जिला सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) में विश्वव्यापी कोरोना जनित संकट के निवारण एवं विश्वमंगल की प्रार्थना के साथ अपने-अपने घरों में यज्ञ करते परिजन

सुलतानपुर में बड़ी श्रद्धा और विधि-विधान से हुआ यज्ञ

वाराणसी : हवन साम्रगी और यज्ञ विधि पत्रक घर-घर पहुँचाए

देवरिया में यज्ञ और वृक्षारोपण

कानपुर में चेतना केन्द्र हंसपुर में यज्ञोपरांत वृक्षारोपण

गायत्री चेतना केन्द्र, मुरादाबाद से जुड़े परिजनों ने अपने घर पर ही यज्ञ करते हुए बड़ी श्रद्धा के साथ की वैश्विक यज्ञ अभियान में भागीदारी

गुरुग्राम में 1875 घरों में यज्ञ

गुरुग्राम। हरियाणा : विश्वव्यापी विभिषकाओं के शमन और कोरोना वायरस हेतु देश और दुनिया में अनेक तरह के प्रयोग किए जा रहे हैं। अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा 31 मई 2020 को वैश्विक स्तर पर ऐसा ही एक आध्यात्मिक प्रयोग 'गृहे-गृहे यज्ञ-उपासना' का किया गया। गायत्री परिवार गुरुग्राम ने इसमें भागीदारी करते हुए 1875 घरों में यज्ञ कराए। एक माह पूर्व से ही जनसंपर्क, प्रशिक्षण जैसे कार्यों के साथ इस आयोजन को सफल बनाने में डा. रेखा प्रकाश की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उल्लेखनीय है कि दिल्ली और उससे लगे गुरुग्राम में लॉक डाउन की सख्ती को देखते हुए इसे एक शानदार सफलता कहा जा सकता है।

पंजाब के 10,000 परिवारों ने यज्ञ किया

लुधियाना। पंजाब

श्री राजीव शर्मा के अनुसार पूरे पंजाब में कोरोना महामारी के शमन के लिए विशिष्ट आध्यात्मिक प्रयोग के रूप में लोगों ने अपनाया। घर-घर हुए यज्ञों में इसके लिए, गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र, सूर्य मंत्र एवं वैश्वानर देव मंत्र से विशेष आहुतियाँ दी गईं। श्री सुनील मिश्रा के अनुसार पूरे पंजाब में 10,000 घरों में यज्ञ हुए।

अवसर बनकर आई प्रतिकूल परिस्थितियाँ

लॉक डाउन में स्वावलंबन केंद्र का शुभारंभ हुआ

परसवाड़ा, बालाघाट। म.प्र. गायत्री परिवार परसवाड़ा ने आत्मनिर्भर भारत की दिशा में कदम बढ़ाते हुए हवन सामग्री एवं समिधा (आम, बड़, पीपल, पलाश, मदार आदि की लकड़ी की) के पैकेट्स बनाने का कार्य आरंभ किया है। युग साहित्य विक्रय केन्द्र विद्या विस्तार पटल गायत्री शक्तिपीठ बालाघाट के माध्यम से बाजार में इसकी आपूर्ति की जाएगी।

युवा प्रकोष्ठ परसवाड़ा के प्रभारी श्री लक्ष्मण पटले ने 31 मई के गृहे-गृहे यज्ञ अभियान के लिए आवश्यक समिधा एवं हवन सामग्री की आपूर्ति के लिए यह कार्य आरम्भ किया था, लेकिन अब इसे एक स्वावलम्बन केन्द्र के रूप में जारी रखकर इसे लोगों की आजीविका का साधन बनाने का निर्णय लिया गया है। अब कपास की बत्ती, हर्बल सैनिटाइजर जैसे उत्पाद बनाने के काम भी प्रारम्भ किये हैं।

गुरुजनों से वाणी अथवा मन से, गुप्त अथवा प्रकट रूप में कभी बैर नहीं करना चाहिए। – भगवान महावीर

भावभरी श्रद्धाञ्जलि

गुरुचेतना के साथ एकाकार हुए युगऋषि के निषादराज, लाखों वनवासियों के उद्धारक डेमनिया बाबा

सालीटांडा, बड़वानी। मध्य प्रदेश

8 जून की प्रातः 11.30 बजे पूरे निमाड़ क्षेत्र और आसपास गुजरात, महाराष्ट्र के वनवासी समाज को विचलित करने वाला समाचार मिला, डेमनिया बाबा नहीं रहे। यह समाचार गायत्री परिवार के लिए भी पीड़ा दायक था, जिसने युग निर्माण आन्दोलन को सही मायनों में चरितार्थ कर दिखाने वाला एक दुर्लभ हीरा खो दिया था। समाज ने बड़े-बड़े विद्वान देखे, बड़े-बड़े कथाकारों को सुना, लेकिन डेमनिया बाबा एक ऐसे प्रभावशाली व्यक्तित्व का नाम था, जो न तो पढ़े-लिखे थे, न बड़े-बड़े सभा-समारोह करते थे, न ही बड़े-बड़े उपदेश दिया करता था। वे तो बस पारिवारिक भाव के साथ सामाजिक सम्मेलन ही किया करते थे। बोलता था उनका व्यक्तित्व, गुरुदेव के प्रति उनका समर्पण और उसी से प्रभावित होकर लाखों वनवासी उनकी प्रेरणाओं को शिरोधार्य कर अपने जीवन को बदलने के लिए सहज ही तैयार हो जाया करते थे।

डेमनिया बाबा अत्यंत सौम्य ,सरल ,शालीन, विनम्र थे। लोगों ने उन्हें कभी उद्विग्न होते या भयभीत होते अथवा क्रोध करते या खुशी मनाते नहीं देखा। वे न तो ग़रीबी में चिन्तातुर थे और न गुरुकृपा से मिली सामर्थ्य से कभी अहंकार ही उन्हें छू सका। वे तो बस हर समय अपने गुरुदेव की स्मृतियों में ही डूबे दिखाई देते थे।

सम्मान

- तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अर्जुन सिंह ने लाखों वनवासियों को व्यसनमुक्त करने के लिए डेमनिया बाबा को सम्मानित किया था।
- शान्तिकुंज में गायत्री जयन्ती पर डेमनिया भाई का सम्मान किया गया।
- सालीटांडा में आयोजित 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर साहब पहुँचे, एक अविस्मरणीय आयोजन में हुआ। हज़ारों वनवासियों को गायत्री मंत्र की दीक्षा दी।

श्रद्धेय डॉक्टर साहब से सम्मान ग्रहण करते डेमनिया भाई डाबर

युगऋषि का विलक्षण आशीर्वाद

जब वे परम पूज्य गुरुदेव को जानते तक नहीं थे, तब पीपल के पत्ते पर उन्हें गुरुदेव ने दर्शन दिया। शान्तिकुञ्ज पहुँचे तो त्रेतायुग के अपने मित्र 'निषादराज' कहकर गले लगाया। परम पूज्य गुरुदेव पैदल चलकर उनके गाँव सालीटांडा पहुँचे थे और उनके घर रखी रोटी को अपने हाथों से ग्रहण कर आशीर्वाद दिया था।

डेमनिया बाबा ने अपना पूरा जीवन वनवासियों के उत्थान के लिए लगा दिया। उन्होंने आदिवासियों में प्रचलित नशा, मांसाहार जैसी अनेक कुप्रथाएँ समाप्त कर लाखों लोगों को गायत्री उपासक बना दिया। वे प्रत्येक ऋषिपंचमी को एक विशाल सम्मेलन बुलाते रहे, जिसमें 100-100 कि.मी. दूर तक के 15 से 20 हज़ार वनवासी हर वर्ष सालीटांडा आया करते थे। उनका प्रभाव क्षेत्र पूरे निमाड़ के अलावा पड़ोसी गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान तक था। इन सम्मेलनों में आने वाले हर नए नर-नारी को यज्ञोपवीत एवं दीक्षा देते और पहले से धारण करने वालों का यज्ञोपवीत परिवर्तन कराते थे।

श्रद्धाञ्जलि

निःसंदेह डेमनिया बाबा परम पूज्य गुरुदेव के अंग-अवयव ही थे। 68 वर्ष की उम्र में बड़े कार्य के लिए ही पावन गुरुसत्ता ने उन्हें बुलाया है। जीवनभर शान्ति और संतोषभरा जीवन जीने वाली दिव्य आत्मा को परलोक में भी शान्ति, सद्गति ही मिलती है। उनका देवलोक गमन हम सबके लिए दुःखदाई है, लेकिन उन्हें सच्ची श्रद्धाञ्जलि यही है कि उनके जीवन की जिन प्रेरणाओं से हम प्रभावित हैं, उन्हें अपनाते हुए उनके कार्यों को गति देते रहें।

श्रद्धेय डॉक्टर साहब एवं श्रद्धेया जीजी सहित समस्त शान्तिकुञ्ज परिवार, अखिल विश्व गायत्री परिवार की ओर से आदरणीय डेमनिया बाबा को भावभरी श्रद्धाञ्जलि।

श्रीमती त्रिवेणी देवी अग्रवाल, जबलपुर। मध्य प्रदेश

जबलपुर में गायत्री परिवार की बुनियाद रखने वालों में से एक श्रीमती त्रिवेणी देवी अग्रवाल, जिन्हें परम पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी गायत्री परिवार की मीरा कहते थे, दिनांक 28 मई 2020 को पावन गुरुसत्ता के श्री चरणों में विलीन हो गईं।

वे गायत्री मां की अनन्य आराधिका थीं। सन् 1953 में विवाह से पूर्व ही उन्होंने पहली बार सवा लाख गायत्री मंत्र का अनुष्ठान किया। सन् 1975 से सक्रिय रूप से मिशन के कार्यों में जुट गई थी। उन्होंने अपनी जबलपुर जिले के ग्राम मझौली की पैतृक भूमि में गायत्री शक्तिपीठ का निर्माण कराया। जीवन की संध्या वेला में बिस्तर पर रुग्णावस्था में रहते हुए भी इस शक्तिपीठ में नवम्बर 2019 में एक भव्य संस्कार भवन बनवाया।

श्रीमती त्रिवेणी देवी अग्रवाल ने अपने बच्चों-डॉ. रविन्द्र, डॉ. आभा, विभा नैनीवाल एवं डॉ. ऊषा खण्डेलवाल को सेवा-साधना के समृद्ध संस्कार दिए। उनकी सुपुत्री डॉ. ऊषा खण्डेलवान ने परम पूज्य गुरुदेव पर पीएच.डी. की। दामाद डॉ. अशोक खण्डेलवाल एक प्रखर वक्ता थे। दोनों ही अनेक वर्षों तक शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता रहे।

श्रीमती साधना आंबेकर, भोपाल। मध्य प्रदेश

जिनके प्रेम और प्रेरणाओं का पोषण पाकर सपूत जन्म लेते और मातृभूमि की सेवा के लिए समर्पित होते हैं, ऐसी ही माता श्रीमती साधना आंबेकर का 19 मई को 70 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। वे शान्तिकुञ्ज के समर्पित एवं लोकप्रिय कार्यकर्त्ता, युवा प्रकोष्ठ से जुड़े स्वयंसेवक श्री सदानन्द आंबेकर की माता थी। वो तीन पुत्र एवं दो पुत्रियों की माता थीं।

गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान-छत्तीसगढ़

नए भारत के निर्माण की उमंगों के साथ नन्हीं बेटियों ने किया यज्ञ

सरगुजा। छत्तीसगढ़

31 मई को लाखों परिवारों ने यज्ञ किया। लेकिन सरगुजा जिले के सीतापुर में प्रतापगढ़ से मिला एक चित्र विशेष उत्साहवर्धक था। इसमें कुछ बालिकाओं की एक टोली स्वतः ही यज्ञ करती दिखाई देती है।

कोरबा में मीडिया का प्रभार देख रहीं डॉ. शोभना परसाई ने यह चित्र प्रज्ञा अभियान को भेजा है। उन्होंने बताया कि

बच्चों ने बनाई अपनी टोली, स्वयं सीखा और यज्ञ किया

वहाँ की कुमारी खुशी एक्का ने इस यज्ञ का आयोजन किया था। उसने स्वप्रेरणा से ही अपनी बाल टोली बनाई, यज्ञ का अभ्यास किया और फिर पूरे विधि-विधान से गायत्री हवन विधि सम्पन्न की।

डॉ. परसाई ने बताया कि इन बालिकाओं की आँखों में नए भारत के निर्माण का एक सपना है, जिसे वे परम पूज्य गुरुदेव के विचारों और संकल्पों के अनुरूप देखना चाहती हैं। कुमारी खुशी वहाँ के गायत्री परिवार की परिजनबालमती एक्का की बेटी है।

प्रतापगढ़ गाँव की बच्चियाँ यज्ञ करते हुए

जिले में 38,251 यज्ञ

गरियाबन्द। छत्तीसगढ़

गरियाबन्द जिले के राजिम, फिंगेश्वर ब्लॉक में सरपंचों ने अपने-अपने गाँव में मुनादी कर यज्ञ अभियान में भाग लेने की लोगों से अपील की। मैनपुर ब्लॉक के कुछ गाँवों में लोगों ने अपने गोठानों में भी यज्ञ किया। सरस्वती शिशु मंदिर के आचार्यों का शानदार सहयोग मिला। पूरे जिले में 38251 घरों में सम्पन्न होने के समाचार मिले हैं। हर जगह कोरोना वायरस के संक्रमण से देश को मुक्त कराने की प्रार्थनाएँ हुईं।

17,000 घरों में यज्ञ

रायगढ़। छत्तीसगढ़

31 मई रविवार को संपूर्ण रायगढ़ जिले में एक साथ 17 हज़ार से अधिक घरों में गायत्री यज्ञ संपन्न हुए। इनमें कोरोनावायरस महामारी के निवारण हेतु अथर्ववेद की ऋचाओं से उद्धृत कोरोना कृमिनाशक मंत्र, कोरोना जनित रोग निवारणर्थ मंत्र, एवं आपद रक्षार्थ मंत्र से विशेष आहुतियाँ समर्पित करने का आह्वान सभी से किया गया था।

जिले के समस्त कार्यकर्त्ताओं के एक माह के अथक परिश्रम से यह अभियान शानदार ढंग से सम्पन्न हुआ। लोगों को पूर्व में ही कुण्डीय यज्ञ, सूक्ष्म यज्ञ एवं मोबाइल एप से यज्ञ करने जैसे प्रशिक्षण दिए गए। निर्धारित समयावधि में यज्ञ कर्मकाण्ड का लाइव यूट्यूब प्रसारण बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ। सभी को यज्ञ का उद्देश्य और उसका तत्त्वदर्शन समझाकर नियमित रूप से यज्ञ करने की प्रेरणा दी गई।

व्यवस्थित प्रशिक्षण के कारण हुए प्रभावशाली आयोजन

15,126 घरों में विषाणु शामक जड़ी-बूटियों और विशेष मंत्रों से आहुतियाँ दी गईं

धमतरी। छत्तीसगढ़

जिले में 15,126 परिवारों ने अपने अपने घरों में यज्ञ किया। प्रत्येक ब्लॉक में लोगों में भरपूर उत्साह था। कोरोना संक्रमण की रोकथाम के लिए विशेष प्रार्थना और प्रयास किए गए। चावल, शुद्ध घी, गुड़, कपूर, गिलोय, लौंग, इलायची, अगर, तगर, जटामांसी जैसी विशेष जड़ी-बूटियों से आहुतियाँ समर्पित की गईं।

जिला समन्वयक दिलीप नाग ने बताया कि वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से प्रचार-प्रशिक्षण का प्रयोग बहुत प्रभावशाली रहा। धमतरी नगर में 1273, धमतरी के ग्रामीण क्षेत्र में 5604, कुरुद में 2337, मगरलोड में 2589, नगरी में 1500 एवं भखारा मे 1823 परिवारों ने यज्ञ किए।

प्रशिक्षित देवकन्याओं का विशिष्ट योगदान

धावडे, धुले। महाराष्ट्र

गायत्री जयंती के शुभ अवसर पर ग्राम-धावडे के कई घरों में गायत्री यज्ञ का आयोजन हुआ। युगशिल्पी श्री भाकाजी महाले के अनुसार गायत्री धाम कन्या कौशल शिविर से प्रशिक्षित देवकन्याओं का इस अभियान की सफलता में प्रमुख योगदान था। बड़ी संख्या में नए लोगों की भागीदारी उत्साहवर्धक रही। उन्हें नियमित गायत्री उपासना के लिए प्ररित किया गया।

धुलिया में नैष्ठिक परिजनों की वैश्विक यज्ञ अभियान में भागीदारी

कोरोना संकट निवारण के लिए सामूहिक अखण्ड जप अनुष्ठान

बुरहानपुर। मध्य प्रदेश

देश-विदेश में कोरोना संकट झेल रही मानवता को इससे मुक्ति दिलाने के लिए बुरहानपुर की गायत्री परिवार शाखा ने सामूहिक साधना का विशिष्ट प्रयोग किया। श्री बसंत मोढे ने बताया कि 18 मई से 31 मई तक अखण्ड जप का सामूहिक प्रयोग हुआ, जिसमें 300 परिवारों ने भाग लिया। लॉक डाउन के नियमों का पालन करते हुए एक स्थान पर जप न करते हुए सभी ने अपने-अपने घर पर ही जप साधना की। पूर्व में ही सबसे संपर्क कर प्रातः 6 बजे से सायं 6 बजे के बीच एक-एक घण्टे का सबका समय निश्चित कर दिया गया था, ताकि अखण्ड जप का क्रम न टूटे, सबकी भागीदारी हो।

300 परिवारों ने भाग लिया। अपने घर ही जप किया।

इस साधना अभियान की पूर्णाहुति 31 मई को गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ के विराट प्रयोग एवं गायत्री जयंती पर्व आयोजन के साथ हुई।

भातकी, बड़वानी। मध्य प्रदेश

गायत्री जयंती के पावन अवसर पर गायत्री चेतना केन्द्र भातकी स्थित आचार्य श्रीराम स्मृती उपवन में वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित हुआ। तत्पश्चात गाँव के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के प्रयास से 151 घरों में कुण्डीय यज्ञ हुए। हनुमान मंदिर भातकी में दीपयज्ञ का कार्यक्रम आयोजित हुआ। श्रीमति रत्ना पवार, भीकाजी महाले, दिलीप पाटिल आदि ने ऑन लाइन प्रेरणा, प्रशिक्षण देकर इन कार्यक्रमों की व्यवस्था की थी।

गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान-बिहार, झारखण्ड और राजस्थान

जमशेदपुर में 1100 और झारखण्ड में 24 हज़ार घरों में यज्ञ सम्पन्न हुए

जमशेदपुर। झारखण्ड
इस वर्ष गायत्री जयन्ती पर्व पर सार्वजनिक समारोह सम्पन्न न हो सके, लेकिन नवयुगदल (युवा प्रकोष्ठ) टाटानगर के नेतृत्व में पूरे नगर में गृहे-गृहे यज्ञ अभियान के लिए भरपूर उत्साह था। अकेले जमशेदपुर में लगभग 1100 घरों में यज्ञ सम्पन्न हुए, जबकि झारखण्ड प्रान्त में कुल 24,000 घरों में यज्ञ होने की सूचना मिली है। प्रान्तीय संगठन ने देव संस्कृति को घर-घर प्रतिष्ठित करने के इस अभियान को माँ गायत्री एवं गंगा के अवतरण पर्व एवं परम पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण दिवस पर उन्हें भावभरी श्रद्धाञ्जलि के भाव से सम्पन्न कराया। हर घर में विश्वव्यापी महामारी कोरोना से मुक्ति हेतु प्रार्थना की गई।

सेवा के प्रति कृतज्ञता का भाव विकसित करने का अभूतपूर्व अवसर

बगोदर, गिरिडीह। झारखण्ड
बगोदर शाखा ने बड़ी सूझबूझ के साथ 31 मई के 'गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान' को लोकप्रिय बनाया। उस दिन बगोदर के अलावा प्रखण्ड के बेको, बन्दरवारो, खेतको, हेसला, औरा आदि गाँवों में दो हजार से अधिक घरों में यज्ञ सम्पन्न हुए।

मिशनरी निष्ठा और कुशल नेतृत्व के धनी श्री संजय कुमार विभूति ने बताया कि इस यज्ञ अभियान को देव संस्कृति के विस्तार और घर-परिवार में सुख, शान्ति, समृद्धि जैसे उद्देश्यों के साथ-साथ लोगों की भावनाओं को देश में आसन्न संकट कोरोना महामारी के साथ जोड़ा गया। सभी से इस महामारी के शमन और पिछले दो माह से इस महामारी से जूझ रहे डॉक्टर्स, मेडिकल स्टाफ, पुलिस, आवश्यक सेवा-स्वच्छता से जुड़े लोग और पीड़ित मानवता की सेवा कर रहे भावनाशीलों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने की प्रार्थना की गई। घर-घर प्रार्थनाएँ हुईं। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री संजय कुमार विभूति के अलावा सर्वश्री संजय चौरसिया, राम कुमार, अशोक चौरसिया आदि पूरे मनोयोग से संलग्न रहे।

'स्वस्थ भारत, श्रेष्ठ भारत' निर्माण की कामना और प्रार्थना के साथ हुए यज्ञ

अलवर के घरों में चल रहा गृहे-गृहे यज्ञ अभियान

करौली कुण्ड, अलवर। राजस्थान
गायत्री शक्तिपीठ करौली कुण्ड अलवर से जुड़े शहर के सभी गायत्री परिजनों ने 'सर्वे भवन्तु सुखिनः ...' की प्रार्थना के साथ वैश्विक यज्ञ अभियान में भाग लिया। शहर में 150 से भी अधिक घरों में गायत्री यज्ञ हुए। कई डॉक्टर्स और प्रतिष्ठित गणमान्यों ने यज्ञ किए। जिले की सभी स्थानों में सैकड़ों की संख्या में यज्ञ हुए। शक्तिपीठ कार्यवाहक श्री सतीश सारस्वत के अनुसार इस यज्ञों के माध्यम से पूरे जिले में 'स्वस्थ भारत, श्रेष्ठ भारत' के निर्माण में अपना मानवोचित योगदान देने का उत्साह जगाया गया।

कुम्हेर, भरतपुर। राजस्थान
गायत्री शक्तिपीठ कुम्हेर के कार्यकर्त्ताओं ने बहुत ही उत्साह के साथ यज्ञ अभियान को गति दी। शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री श्यामसुन्दर शर्मा के अनुसार 15 प्रज्ञा मण्डलों के सत्प्रयासों से 150 घरों में यज्ञ हुए। सर्वाधिक प्रशंसनीय पुरुषार्थ कुम्हेर तहसील के प्रज्ञा मण्डल बावेन के संचालक श्री प्रेम सिंह प्रजापति का था, जिनकी टीम ने 75 घरों में यज्ञ सम्पन्न कराये।

यज्ञमय हुआ वनवासी क्षेत्र 'वागड़' डूँगरपुर में 5000 और बाँसवाड़ा में 2000 यज्ञ हुए

डूँगरपुर में 5000 घरों में यज्ञ
वागड़ क्षेत्र के ही एक और जिले डूंगरपुर में भी गाँव-गाँव यज्ञ अभियान के प्रति शानदार उत्साह दिखाई दिया। पूरे जिले में लगभग 5000 घरों में कोरोना संक्रमण निवारण के लिए गायत्री यज्ञों का आयोजन हुआ।

बाँसवाड़ा। राजस्थान
राजस्थान के वनवासी क्षेत्र वागड़ के बाँसवाड़ा जिले की कई तहसीलों में गृहे-गृहे यज्ञ अभियान के प्रति जनमानस का उत्साह दर्शनीय था। तहसील मुख्यालय घाटोल और पूरी तहसील में सर्वाधिक सक्रियता दिखाई दी। श्री अंबालाल पंचाल के अनुसार घाटोल कस्बे के 402 घरों में और पूरी तहसील में 1151 घरों में यज्ञ हुए। अन्य तहसील आनन्दपुरी में 108 परिवारों ने और कुशलगढ़ में 119 परिवारों ने यज्ञ किए। लोगों में कोरोना वायरस से बचाव के लिए यज्ञ के प्रति विशेष आस्था दिखाई दी। किसी ने कुण्ड बनाकर तो किसी ने वेदी बनाकर यज्ञ किया। हर क्षेत्र में गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं ने उनके मार्गदर्शन में कोई कसर नहीं छोड़ी।

गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-गुजरात

जामनगर : 18,552	वडोदरा : 16,000	आणंद : 8,497
गाँधीनगर : 5,459	संतरामपुर : 5,000	साबरकांठा : 3,220

(विस्तृत समाचार प्रज्ञा अभियान के गुजराती संस्करण में प्रकाशित किए गए हैं।)

जामनगर जिले में 31 मई को जामनगर तहसील में 14188 और अन्य तहसीलों में कुल मिलाकर 4664, इस प्रकार कुल 18852 घरों में गायत्री यज्ञ समन्न हुए। संगठन स्तर पर एक सशक्त अभियान के रूप में इनका संचालन हुआ। जिला संगठन कर्मकाण्ड पत्रक, गोबर के कण्डे और 24 प्रकार की वनौषधियों से बनी हवन सामग्री के किट जामनगर शहर में 10 वितरण केन्द्रों के माध्यम से घर-घर पहुँचाए थे।

वडोदरा शहर में ही अकेले 11,444 घरों में यज्ञ हुए। अन्य स्थानों को मिला कर पूरे वडोदरा जिले में 16,035 घरों में गायत्री यज्ञ होने के समाचार मिले हैं। अलग-अलग शाखाओं और परिजनों ने व्यक्तिगत रूप से संकल्प लिए, संपर्क किया और बड़ी जिम्मेदारी के साथ यज्ञ सम्पन्न कराने की व्यवस्था बनाई। गायत्री शक्तिपीठ खटंबा ने 2000 और गायत्री शक्तिपीठ कायावरोहण ने आसपास के गाँवों में 1100 घरों में यज्ञ कराए। सुभानपुरा शाखा ने 'गूगल मीट' एप के माध्यम से 1500 घरों में यज्ञ सम्पन्न कराया।

आणंद जिले में नैनो यज्ञों पर विशेष जोर रहा। जिले में सम्पन्न हुए कुल 8,497 यज्ञों में से 8,353 घरों में नैनो यज्ञ किए गए थे। कार्यकर्त्ताओं ने विश्वशान्ति और आपदा से मुक्ति की प्रार्थना के साथ लोगों में समझदारी और सुरक्षा के साथ चुनौतियों का सामना करने का साहस भी जगाया।

संतरामपुर, जिला महिसागर में गृहे-गृहे यज्ञ अभियान को वातावरण परिष्कार के ब्रह्मास्त्र प्रयोग के रूप में प्रचारित किया गया था। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से प्रशिक्षण और यज्ञ संचालन के प्रयास ही अधिकतर हुए। संतरामपुर में 5,000 से अधिक घरों में यज्ञ कराए गए।

खेड़ा जिले की मातर तहसील में 668, नडियाद में 579, कपड़वंज में 426, महेमदाबाद में375, गणतेश्वर में 225, ठासरा में 113, कठलाल में 92 और महुधा में 54 घरों में गायत्री यज्ञ सम्पन्न हुए।

अरवल्ली जिला मुख्यालय मोडासा ने आसपास के 30 गाँवों में यज्ञ अभियान को गति दी। अलग-अलग क्षेत्रों के व्हॉट्सएप ग्रुप बनाए गए और उनके द्वारा सक्रियता, जागरूकता और प्रेरणा, प्रशिक्षण का अभियान निरन्तर चलाया जाता रहा। मोडासा शाखा के प्रयासों से 3000 से अधिक घरों में यज्ञ हुए।

अहमदाबाद की कई शाखाओं ने यज्ञ अभियान को सफल बनाने के लिए बढ़-चढ़कर उत्साह दर्शाया। घोडासर शाखा के मुख्य समन्वयक श्री वीरेन्द्र भावसार ने बताया कि यज्ञोपरान्त 2500 सेअधिक लोगों ने उन्हें यज्ञ सम्पन्न होने की सूचना मिस्ड कॉल देकर दी। त्रिपदा महिला मण्डल बोडकदेव ने कुल 1071 घरों में यज्ञ कराए। मण्डल से जुड़ी प्रत्येक बहिन ने 24 से लेकर 121 तक घरों की जिम्मेदारी ली थी।

50 मुस्लिम परिवारों में यज्ञ हुए

गाँधीनगर जिले में कुण्डीय यज्ञ एवं सूक्ष्म यज्ञ तो बड़े पैमाने पर हुए ही, दीपयज्ञों पर भी जोर रहा। आयोजकों ने न केवल 31 मई को दीपयज्ञ कराए, बल्कि लोगों को नियमित अंतराल से इस प्रकार यज्ञ करते रहने की प्रेरणा दी। रांधेजा शाखा ने 50 मुस्लिम परिवारों में भी गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराए।

बूँदी नगरी में 'इदं न मम' की गूँज

बूँदी। राजस्थान
बूँदी नगर के विकासनगर, गुरु नानक कॉलोनी, रजत गृह कॉलोनी, जवाहर नगर हाउसिंग बोर्ड, भारत नगर, नैनवा रोड तथा बालचंद पाडा में लगभग 400 घरों में यज्ञ हुए। श्री प्रतीक लाड्ला के अनुसार जिले के कई गाँवों में यज्ञ अभियान के प्रति शानदार उत्साह देखा गया। घर-घर सबके लिए सद्बुद्धि और सबके लिए उत्तम स्वास्थ्य की कामना के साथ यज्ञाहुतियाँ समर्पित की गईं।

प्रज्ञा मण्डल ने 515 घरों में यज्ञ कराया

बोडरा, धमतरी। छत्तीसगढ़
प्रज्ञा मण्डल बोडरा के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री दाऊलाल साहू एवं श्रीमती महेश्वरी साहू को उनकी लगभग 30 वर्षों की सेवा-साधना के परिणाम स्वरूप इस वर्ष गृहे-गृहे यज्ञ अभियान में शानदार सफलता प्राप्त की। उनके द्वारा प्रज्ञा मण्डल बोडरा के 350 घरों में तथा प्रज्ञा मण्डल सम्बलपुरा के 230 घरों में सम्पर्क किया गया। इनमें से क्रमशः 319 एवं 196 घरों में यज्ञ हुए। वैश्विक संकट निवारण एवं पर्यावरण संरक्षण के इस महान अभियान में ग्राम के सरपंच, पंच, विभिन्न पदाधिकारी एवं गणमान्यों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

चिरस्मरणीय रहेंगी अभूतपूर्व संकट के समय की गई पीड़ित मानवता की सेवा

एम्स में 50,000 पैकेट्स भोजन,

भोपाल। मध्य प्रदेश
भोपाल की गायत्री प्रज्ञापीठ, बरखेड़ा भेल शाखा एम्स हॉस्पिटल में भरती मरीज, उनके परिचारक एवं आपदा प्रभावित श्रमिकों की सेवा में समर्पित है। शाखा द्वारा एम्स में प्रतिदिन 700 से 800 पैकेट्स भोजन बाँटे जा रहे हैं। समाचार मिलने तक यह शाखा एम्स में 50,000 पैकेट्स वहाँ प्रदान कर चुकी थी। इसके साथ ही हज़ारों की संख्या में मास्क भी वितरित किए गए।

सवा लाख का अनुदान
गायत्री परिवार ट्रस्ट, बरखेड़ा, भेल ने शान्तिकुञ्ज के आपदा राहत कोष में ₹125000/- का अनुदान भी दिया है।

प्रवासी श्रमिकों एवं पुलिसकर्मियों की सेवा
यह शाखा अपने गाँव लौट रहे भोपाल के गोविंदपुरा थाना, आधारशिला थाना एवं कटारा थाना के पुलिसकर्मियों तथा श्रमिकों के लिए पाथेय देने का कार्य भी कर रही है जो आज तक अनवरत है।

एम्स के द्वार पर भोजन वितरण करते परिजन

64वें दिन हुआ सेवाकार्यों का समापन

25000 लोगों को भोजन पैकेट व राशन दिया

देवास। मध्य प्रदेश
अखिल विश्व गायत्री परिवार की देवास शाखा द्वारा कोरोना राष्ट्रीय महामारी के चलते हुए लॉक डॉउन में 64 दिनों तक आपदा राहत अभियान चलाया गया। अंतिम दिन जरूरतमंदों में सूखा राशन एवं मीठे दलिया के पैकेट वितरित किए गए। शक्तिपीठ के मीडिया प्रभारी विक्रमसिंह चौधरी के अनुसार इन 64 दिनों में लगभग 25000 लोगों को गायत्री परिवार की सेवाओं का लाभ मिला। उन्हें सूखा राशन अथवा भोजन के पैकेट दिए गए।

गायत्री परिवार भोजन समिति के प्रभारी श्री प्रमोद निहाले एवं रामनिवास कुशवाह ने इन सेवाओं को 'राष्ट्रधर्म' बताते हुए पीड़ितों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की। उन्होंने राहत कार्यों में प्रशासन के सहयोग की भूरि-भूरि सराहना की। गायत्री परिवार के नैष्ठिक सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि विपत्ति की घड़ी में गायत्री परिवार से मिले सहयोग को लोग लम्बे समय तक याद रखेंगे। इन सेवाओं ने हममें एक नया आत्मविश्वास जगाया है, आत्मबल बढ़ाया है।

> **इन सेवाओं ने हममें एक नया आत्मविश्वास जगाया है, आत्मबल बढ़ाया है।**
> **- अभियान में जुटे परिजन**

इस अभियान के प्रमुख सहयोगी थे परिव्राजक चंद्रिका शर्मा, लक्ष्मण पटेल, विक्रमसिंह ठाकुर, दिलीपसिंह सोलंकी, केशव पटेल, हीरालाल निहाले, सीमा कुशवाह, शकुंतला शर्मा, सुशीला निहाले, गणेशप्रसाद व्यास एवं मनोहर निहाले।

नगर निगम ने सम्मानित किया

गुरुग्राम। हरियाणा
नगर निगम गुरुग्राम ने कोविड-19 संकट के समय किए गए गायत्री परिवार ट्रस्ट गुरुग्राम के आपदा राहत कार्यों का सम्मान किया। निगम की चेयर पर्सन श्रीमती बत्रा एवं पूर्व उप मेयर श्री यशपाल बत्रा ने गायत्री परिवार को 'कोरोना योद्धा' के रूप में सम्मानित करते हुए प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

उल्लेखनीय है कि गायत्री परिवार ट्रस्ट गुरुग्राम ने कोरोना संकट के समय 110 परिवारों को एक-एक सप्ताह का राशन दिया, लगातार बीस दिन तक नगर के विभिन्न क्षेत्रों के जरुरतमंद लोगों में भोजन पैकेट्स वितरित किए। एक लाख रुपये शान्तिकुञ्ज के माध्यम से और इतनी ही राशि सीधे मुख्यमंत्री राहत कोष में जमा कराई।

34 गाँवों के परिजनों के संगठित प्रयास

बाराबंकी/लखनऊ। उत्तर प्रदेश
28 मार्च से लेकर 17 मई तक के 51 दिनों के लॉक डाउन काल में बाराबंकी जिले के मसौली ब्लॉक गायत्री परिवार ने आपदा पीड़ितों की भरपूर सेवा की। ग्राम दादरा के वरिष्ठ परिजन श्री सुरेश चन्द्र 'वानप्रस्थी' के पीड़ितों की सेवा के लिए बेचैन हृदय ने नेतृत्व का बीड़ा उठाया। गाँव-गाँव से भोजन बनाने की व्यवस्था की गई। कुल 34 गाँवों की शाखाओं के सहयोग से 28 मार्च से लगातार 3 मई तक 300-400 भोजन पैकेट्स तहसीलदार कार्यालय-सिरौली गौसपुर तक पहुँचाकर प्रशासन का सहयोग किया गया। ग्राम सफदरगंज के वनवासी भाइयों को 50 पाकेट भोजन नित्य दिया जाता रहा। इसके बाद 4 मई से 17 मई तक हाइवे पर पैदल, साइकल व अन्य साधनों से अपने घरों को लौट रहे मजदूर भाइयों को भोजन, चाय व साइकल रिपेयर सेवा का लाभ दिया जाता रहा।

> **51 दिनों तक प्रतिदिन लगभग 400 लोगों को भोजन कराया**

इस जनसेवा अभियान में लखनऊ के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री एल. बी. सिंह एवं वरिष्ठ साधिका श्रीमती माधुरी पाण्डे का विशेष आर्थिक योगदान था। श्री सिंह के अनुसार गाँव वालों के पास आटा व सब्जी के लिए आलू की व्यवस्था तो थी मगर अन्य खर्चों हेतु आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। इस आर्थिक सहयोग का बीड़ा उक्त महानुभावों ने उठाया। लखनऊ से महिला मण्डल गोमती नगर व विचार क्रांति अभियान समिति के परिजनों का सहयोग रहा।

संक्रमण से बचाव के लिए काढ़ा वितरण

ओसियाँ, जोधपुर। राजस्थान
कस्बे में लगातार कोरोना पॉजिटिव केस आने और अन्य बीमारीयों के प्रकोप को देखते हुए गायत्री शक्तिपीठ ओसियाँ द्वारा 22 मई से 25 मई तक लगातार चार दिन तक सैकड़ों लोगों को काढ़ा पिलाया गया। परिव्राजक श्री ओमनारायण मिश्रा के अनुसार ओसियाँ के पूर्व विधायक भैराराम सियोल ने भी शक्तिपीठ आकर काढ़े का सेवन किया। उन्होंने कहा कि इस अदृश्य बीमारी से बचाव ही सर्वोत्तम उपाय है। यह आयुर्वेदिक काढ़ा जीवनी शक्ति बढ़ाकर कोरोना के संक्रमण से बचाता भी है और कोरोनवायरस का रामबाण इलाज भी है।

पीड़ितों की सेवा के संग ज्ञानयज्ञ भी

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश
परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से जनमानस के परिष्कार के लिए अहर्निश समर्पित गायत्री परिवार प्रयागराज की ज्ञानयज्ञ शाखा ने कोरोना संकट में एक ओर जरूरतमंदों के भोजन की व्यवस्था की और दूसरी ओर लॉकडाउन के सभी नियमों का पालन करते हुए ज्ञानयज्ञ भी जारी रखा। श्री देवव्रत साहा राय ने बताया कि उनकी शाखा ने पाँच पुस्तकों के सेट लगभग एक हज़ार लोगों तक निःशुल्क पहुँचाए।

प्रयागराज की प्रीतम नगर शाखा के कार्यकर्त्ताओं ने 4 अप्रैल से 3 मई तक अपने ही घर पर भोजन बनवाया और अपने निकटतम थाना धूमनगंज के माध्यम से जरूरतमंदों तक पहुँचाया। यह सेवाकार्य जर्मनी में अध्ययनरत कु. मेघा आदित्य के आर्थिक सहयोग से किया गया, जिसमें श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव एवं श्री राजेन्द्र उपाध्याय का विशेष योगदान रहा।

> **अपार्टमेण्ट्स में मंत्रलेखन पुस्तिकाएँ, पुस्तक, प्रज्ञा अभियान, स्टिकर्स पहुँचाएँ**

ज्ञानयज्ञ शाखा ने पाँच पुस्तकों के जो 1000 सेट घर-घर पहुँचाए, उनमें गायत्री मंत्र लेखन की एक बड़ी पुस्तक लॉक डाउन काल में कोरोना संकट से मुक्ति की प्रार्थना के साथ लिखने के आग्रह के साथ दी गई थी। इन पुस्तकों के साथ अखण्ड ज्योति और प्रज्ञा अभियान पत्रिकाएँ भी दी गईं। 20 अपार्टमेण्टों में उनके गाईस के माध्यम से और संगम क्षेत्र एवं अन्य क्षेत्रों में दूध के स्टॉल एवं नर्सिंग होम के माध्यम से पहुँचाए गए। लखनऊ की श्रीमती ममता वर्मा के सौजन्य से एवं श्री राजेन्द्र उपाध्याय के विशेष सहयोग से यह ज्ञानयज्ञ हुआ। उल्लेखनीय है कि यह साहित्य इण्टर कॉलेज की बालिकाओं में वितरित करने के लिए मँगाया गया था।

घर लौट रहे प्रवासी श्रमिकों की सेवा

सरायपाली, महासमुन्द। छत्तीस.
गायत्री शक्तिपीठ सरायपाली के नैष्ठिक कार्यकर्त्ता भाई-बहिन ने विभिन्न राज्यों से पलायन कर गुज़रते श्रमिकों की सेवा में संलग्न रहे। उन्होंने सामूहिक श्रमदान कर श्रमिकों के लिए नाश्ता एवं भोजन तैयार किया। प्रतिदिन लगभग 500 श्रमिकों के भोजन, नाश्ते की व्यवस्था उनके द्वारा की गई।

शक्तिपीठ सरायपाल में दैनिक सेवाकार्यों में जुटे भाई-बहिन

स्टेशन, बस स्टैण्ड पर सामग्री वितरण

बिलासपुर। छत्तीसगढ़
प्रथम लॉक डाउन से ही बिलासपुर शाखा कोरोना आपदा पीड़ित समाज की भरपूर सेवा कर रही है। इन दिनों उनके द्वारा बस स्टैण्ड एवं आवागमन के सार्वजनिक स्थानों पर स्टॉल लगाकर अपने गाँव के लिए निकल पड़े श्रमिकों को रास्ते के लिए फल एवं सूखा आहार वितरित किया जा रहा है। समग्र सेवा कार्य जिला पुलिस प्रशासन के विशेष सहयोग से सम्पन्न हो रहे हैं।

आपदा राहत अभियान का नेतृत्व कर रहे श्री बी.आर. धुर्वे से 25 मई 2020 को प्राप्त समाचार के अनुसार उस दिन रेल्वे स्टेशन और नया बस स्टेण्ड पर 300 श्रमिकों को ब्रेड पाव, बिस्किट, चॉकलेट आदि बाँटे गए। आपदा राहत कार्यों में सर्वश्री राम कुमार साहू, किर्ती गायग्वाल, ऋषि पटेल, थन्केस पाटनवार, श्रीमती आशा धुर्वे प्रमुख सहयोगी थे।

गायत्री परिवार के स्टॉल पर खाने-पीने के सामान का निःशुल्क वितरण

प्रतिदिन हज़ारों श्रमिकों की सहायता करते रहे

मुम्बई। महाराष्ट्र
गायत्री परिवार मुंबई 'सेवा परमो धर्म' का सूत्र अपनाते हुए 24 मई से कोरोना संकट से बेहाल श्रमिकों की सेवा में संलग्न है। उनके द्वारा प्रतिदिन अपने गाँवों की ओर लौट रहे 2000 से अधिक श्रमिकों को बिस्किट, नमकीन, चने, पानी की बोतल, मास्क, सेनिटाइज़र के किट दिए जा रहे हैं।

सूखा भोजन, मास्क, सेनिटाइज़र बाँटते मुम्बई के गायत्री परिजन

डेढ़-दो माह तक प्रतिदिन चला ग़रीबों में राशन वितरण का कार्य

लखनऊ। उत्तर प्रदेश
गायत्री परिवार पिछले लगभग डेढ़ माह से प्रतिदिन भगवद् आश्रित लोगों की सेवा में समर्पित है। श्री अतुल सिंह के अनुसार उनकी शाखा द्वारा हर दिन अनेक जरूरतमंदों को राशन दिया जा रहा है।

लखनऊ में ग़रीबों में राशन वितरण